इकाई 23 रा-ट्रवाद

इकाई की रूपरेखा

23.1 प्रस्तावना

23.2 रा-ट्रवाद क्या है?

23.2.1 रा-ट्रीय पहचान

23.3 रा-ट्रवाद के सिद्धान्त

23.3.1 मौलिकवादी सिद्धान्त

23.3.1.1 आदिम एवं समाज - जीव विज्ञानीय सिद्धान्त

23.3.2 आधुनिकीकरण के सिद्धान्त

23.3.2.1 सामाजिक संचार सिद्धान्त (ड्यूश, रस्टौव, रॉक्कन और एण्डरसन)

23.3.2.2 आर्थिकवादी सिद्धान्त

23.3.2.3 गैलनर का रा-ट्रवाद का सिद्धान्त

23.3.2.4 राजनीतिक-वैचारिक सिद्धान्त

23.4 रा-ट्रवाद का उदय एवं विकास

23.4.1 यूरोप में रा-ट्र-राज्य

23.4.2 अमेरिका में रा-ट्र-राज्य

23.4.3 उपनिवेश-विरोधी रा-ट्रवाद

23.5 सामयिक घटनाएँः जातीय पुनरुत्थान, भूमण्डलीयकरण और रा-ट्रवाद

23.6 सारांश

23.7 अभ्यास प्रश्न

23.1 प्रस्तावना

रा-ट्रवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाचक्र है, जिसमें रा-ट्रों तथा रा-ट्र-राज्यों को एक परिभा-ीय पहचान देश सन्निहित है। यह एक प्रामाणिक सिद्धान्त है, जिसमें राजनीति के सम्बन्ध में मान्यताओं व विश्वासों का एक विशि-ट संचय होता है। रा-ट्रवाद का सार राजनीतिक सत्ता के सामाजिक आधारों के एक विश्वास से है। विश्व के बारे में सोच के एक तरीके के रूप में यह ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या व समकालीन राजनीति का विश्ले-ाण करने में रा-ट्रों के महत्व पर ज़ोर देता है और यह दावा भी करता है कि मनु-यों में विभेद करने के लिए 'रा-ट्रीय चरित्र' एक व्यापक तत्त्व है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी मनु-यों की एक ओर केवल एक रा-ट्रीयता होनी चाहिए, जोकि उनकी पहचान व नि-ठा का प्रमुख तत्त्व हो। रा-ट्रवाद अपने भाग्य के स्वयं निर्माण करने की सक्षमता की जनता की इच्छा और उनकी अपनी संस्कृति तथा व्यक्तित्व के विकास करने की इच्छा को जनता के रूप में सम्मानित करने का दावा करता है। पिछले दो सौ व-र्ों के दौरान रा-ट्रवाद ने स्वयं को उदारवाद, समाजवाद व साम्यवाद से जोड़ा है और वह एक विजेता बन कर उभरा है। 20वीं शताब्दी के प्रथम-अर्द्ध व-र्ों में भूतपूर्व औपनिवेशिक देशों में रा-ट्रीय आन्दोलनों तथा उनके अंत में

सोवियत संघ के विघटन ने रा-ट्रवाद के शक्तिशाली बल का उद्घाटन किया है। आजकल हम उस विश्व में रह रहे हैं जहाँ शान्तिपूर्ण बहुसंस्कृतिकवाद की जगह रा-ट्र अपने सर्वनाश के निरंतर खतरे को महसूस कर रहे हैं। रा-ट्रवाद के संदर्भ में, यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जहाँ पर कि सभी जातियों को समरूप बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं। इस इकाई में हम इन मुद्दों को उठायेंगे और उन पर विचार करेंगे।

रा-ट्रवाद के अध्ययन को प्रभावित करने वाले चार प्रमुख विवाद हैं। वे हैं:

1) रा-ट्रवाद को कैसे परिभाि-त किया जाए?

2) रा-ट्रों का उद्भव कब हुआ? रा-ट्रवाद के विभिन्न सिद्धान्त इस प्रश्न का उत्तर देने की चे-टा करते हैं, लेकिन हमें कोई अंतिम उत्तर नहीं मिलता है।

3) ऐतिहासिक तौर पर रा-ट्र तथा रा-ट्र-राज्य कैसे फैले और विकसित हुए और क्या पश्चिम तथा ग़ैर-पश्चिम संसार में रा-ट्रवाद के विकास में कोई विशे-ा अंतर है?

4) जातीय पुनरुत्थान तथा भूमण्डलीयकरण के रूप में रा-ट्रवाद के समक्ष नवीन चुनौतियाँ क्या हैं?

23.2 रा-ट्रवाद क्या है?

रा-ट्रवाद अनेक तत्त्वों का सम्मिश्रण है, जिनमें से कुछ की जड़ें मानव प्रकृति में है और जिनमें से अनेकों का एक लम्बा इतिहास है। फिर भी यह एक आधुनिक घटनाक्रम है। इसकी खोज एक कठिन कार्य है और थोड़े से शब्दों में इसे परिभाि-त करना तो और भी कठिन है। एक अर्थ में यह उस समूह का विस्तार है, जिसका कि व्यक्ति सदस्य होता है। इस अर्थ में यह सामूहिक अहंवाद का एक रूप है। नकारात्मक अर्थ में यह मानव प्रकृति में गहन जड़ जमाये 'परदेशी' से भय की अभिव्यक्ति है। आधुनिक अर्थ में इसका उदय परिचित जमीन तथा जनता के उस लगाव से होता है, जोकि देशभक्ति का आधार माना जाता है। हेय्स के अनुसार, रा-ट्रवाद का प्रयोग अनेक तरीकों से किया गया है और आमतौर पर इसका प्रयोग ''एक रा-ट्रीयता के सदस्यों में जिनके पास शायद एक रा-ट्रीय राज्य पहले से ही है, एक मानसिक स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है। एक रा-ट्रीय राज्य अन्य किसी भी प्रकार की नि-ठाओं से सर्वोच्च होता है। अपनी रा-ट्रीयता के प्रति घमण्ड करना, उसकी स्वाभाविक परमश्रे-ठता तथा उनके 'मिशन' पर विश्वास रखना रा-ट्रवाद के अभिन्न अंग हैं''। इसी प्रकार से हैन्स कोह्न ने रा-ट्रवाद को एक राजनीतिक तथ्य का प्रतिनिधित्व करने का प्रयत्न करने वाली मानसिक स्थिति के रूप में परिभाि-त किया है। दूसरी ओर, गैल्लनर लिखते हैं, "रा-ट्रवाद मुख्य तौर पर एक राजनीतिक सिद्धान्त है, जोकि यह मानता है कि राजनीतिक इकाई और रा-ट्रीय इकाई में एकरूपता होनी चाहिए .... रा-ट्रवादी भावना इस सिद्धान्त के उल्लंघन होने के फलस्वरूप उठने वाले क्रोध की भावना है, अथवा उसकी परिपूर्णता से उठने वाली संतुि-ट की भावना है''। गिड्डनस रा-ट्रवाद के मनोवैज्ञानिक चरित्र की ओर इंगित करते हुए कहते हैं कि ''यह एक विशि-ट समुदाय (जाति) के सदस्यों में सामान्यता पर ज़ोर देने वाले चिह्नों तथा विश्वासों का जोड़ के प्रति व्यक्ति का लगाव है''।

संक्षेप में रा-ट्रवाद के दो भाग हैं: (i) एक विचारधारा के रूप में रा-ट्रवाद का राजनीतिक चरित्र जोकि इस विचार की रक्षा करता है कि राज्य एवं रा-ट्र एकरूप होने चाहिए, और (ii) एक समान व्यक्तित्व तथा संस्कृति और एक निश्चित भूमि से जुड़ाव पर आधारित एक समूह बनाने की जागरूकता रखने वाले व्यक्तियों को पहचान प्रदान करने की उसकी क्षमता। रा-ट्रवाद की शक्ति एक विशि-ट समुदाय

से जुड़ाव की भावनाओं को उजागर करने की उसकी क्षमता से निकलती है। जनता के बीच में एकता की भावना को सिंचित करने में चिह्न तथा रीतियाँ एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

इस तरह से रा-ट्रवाद की अवधारणा को समझने के लिए हमें यह ध्यान रखना होगा किः

- रा-ट्रवाद एक भावना है जिसका सम्बन्ध एक समान स्वदेश, एक समान भा-ाा, आदर्शों, मूल्यों तथा परम्पराओं की समानता और झण्डे, गीतों जैसे चिह्नों से एक विशि-ट समूह की पहचान जोकि उन्हें अन्य से अलग करते हैं।

- स्वदेश के प्रति लगाव तथा एक समान संस्कृति की भावना किस प्रकार से एक राज्य के निर्माण की राजनीतिक माँग में परिवर्तित हो जाती है; इस परिवर्तन को सम्पन्न करना कैसे संभव है? रा-ट्र के एक सिद्धान्त को कई प्रश्नों का सामना करना पड़ता है जैसे कि, रा-ट्रवाद एक राज्य की स्थापना की तलाश में कैसे हिंसा का प्रयोग तथा उसका वैधकरण करता है; रा-ट्रीय विचारधारा की क्या भूमिका है; रा-ट्रीय आन्दोलन में नेताओं की क्या भूमिका है और वे किस सीमा तक चिह्नों तथा आदर्शों के प्रचार में योगदान कर सकते हैं।

- रा-ट्रवाद की एक महत्वपूर्ण विशे-ाता विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तरों के लोगों को एकजुट करने की उसकी क्षमता है। रा-ट्रवाद शासन वर्ग की जनता से बिना शर्त नि-ठा बनाए रखने का केवल एक आवि-कार नहीं है, यह उनको यह विश्वास दिलाने का एक उपकरण भी है कि उनमें बहुत सारी समानताएँ हैं। रा-ट्रवाद की निरंतरता के लिए उत्तरदायी मूलभूत तत्त्वों में से यह एक तत्त्व है।

23.2.1 रा-ट्रीय पहचान

परिभा-ाओं के अलावा रा-ट्रवाद के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंश यह जानना है कि रा-ट्रीय पहचान कैसे बनती है, अर्थात कैसे एक व्यक्ति एक विशि-ट समुदाय से अपने आपको जोड़ लेता है और अपने को अन्यों से अलग महसूस करता है। हेयस इस रा-ट्रीय जागरूकता एवं पहचान के उदय के पीछे सात तत्त्वों को उत्तरदायी मानते हैंः भा-ाा तथा साक्षरता, राजनीतिक, व्यापारिक, आर्थिक, आध्यत्मिकता सम्बन्धी (eccelesiastical), धार्मिक एवं ऐतिहासिक तौर पर रक्त सम्बन्ध ने पहचान तथा नि-ठा का पहला लक्षण प्रस्तुत किया। मध्य युग में एक निश्चित भूमि से जुड़े बड़े समूहों का निर्माण हुआ। बाज़ारों की रचना, व्यापार में बढ़ोत्तरी, युद्धों के छेड़े जाने से और राज्य के कार्य क्षेत्र में धीरे-धीरे, लेकिन उत्तरोत्तर प्रगति से ऐसे समुदायों का जन्म हुआ, जिनसे स्वयं को अन्यों से अलग मानने की जागरूकता थी। इसी स्तर पर हम रा-ट्रों तथा विभिन्न रा-ट्रीय पहचानों के उदय की बात करना शुरु कर सकते हैं। गियुबिरनाउ (Guibernau) के अनुसार, रा-ट्रीय पहचान के निर्माण में तीन तत्त्वों ने मुख्य तौर पर सहायता कीः (i) छपाई का विकास तथा देशी भा-ाओं की रचना, (ii) रा-ट्र तथा संस्कृति के बीच सम्बन्ध, और (iii) समान चिह्न और रीतियाँ।

छपाई मशीन के अवि-कार होने के बाद यूरोप में देशी भा-ाओं के विकास ने एक समुदाय से सम्बद्ध होने की भावना के निर्माण में निर्णायक भूमिका अदा की। रा-ट्रीय जागरण की उत्पत्ति एक विशि-ट संस्कृति के अन्तर्गत उन सांझे मूल्यों, परम्पराओं तथा स्मृतियों में होती है, जिनके बारे में एक विशि-ट भा-ाा में सोचा और बोला जाता है। वैसे तो रा-ट्रीय जागरण के निर्माण में देशी भा-ाा का होना अनिवार्य नहीं है, फिर भी यह उस निर्माण को प्रोत्साहित करती है। जहाँ पर रा-ट्र तथा राज्य सहअस्तित्व में थे, वहाँ शिक्षा तथा साक्षरता के सामान्यीकरण ने जनता के बीच संचार की संभावना को न केवल

प्रबलित किया, बल्कि समुदाय की एक सशक्त भावना के विकास में भी सहातया की। अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी तथा जर्मन भा-ाओं के विकास तथा स्कूली प्रणाली पर आधारित शिक्षा ने एक सशक्त रा-ट्रीय जागरूकता की रचना की। जब राज्य एक संस्कृति तथा भा-ा का आरोपण करने का प्रबंध करता है तब 'यह रा-ट्रवाद है जोकि रा-ट्रों को जन्म देता है'। यदि राज्य सफल होता है, तो वह राजनीतिक के अलावा आर्थिक, भौगोलिक, धार्मिक, भा-ाई तथा सांस्कृतिक जैसे अनेक सम्बन्धों के सम्मिश्रण को भी विकसित करने में सफल होता है। यह राज्य है, जोकि रा-ट्र का निर्माण करता है।

दूसरा, रा-ट्रीय पहचान के सम्बन्ध में प्रमुख प्रश्न है - मैं कौन हूँ? पहचान स्वयं की व्याख्या है, जोकि यह निश्चित करती है कि सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक तौर पर एक व्यक्ति क्या और कहाँ है। पहचान समाज में मिलती है, जोकि उसे परिभाि-ात तथा संगठित करता है। वर्तमान काल में रा-ट्र इसी प्रकार के समुदायों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। रा-ट्रीय पहचान उसी (रा-ट्र) का निर्माण है। पहचान को परिभाि-ात करने वाले मूल तत्त्व हैंः समय की निरन्तरता तथा विभेदीकरण। यदि निरन्तरता ऐतिहासिक जड़ों से मिलती है, तो विभेदीकरण का जन्म एक निश्चित भूमि से जुड़े तथा एक सांझी संस्कृति के साथ निर्मित समुदाय की जागरूकता से होता है, जोकि सदस्यों तथा 'परदेशियों' के बीच अन्तर करता है। यह पहचान तीन कार्य करती हैः (i) यह समान राजनीतिक पहचान को निश्चित करने के अधिकार जैसे चयन करने में सहायता करती है, (ii) यह अन्यों के साथ सम्बन्ध संभव करती है, क्योंकि रा-ट्र एक ऐसा समान समूह है जिसमें समान संस्कृति वाले लोग रहते और साथ-साथ काम करते हैं, और (iii) रा-ट्रीय पहचान व्यक्तियों को एक ऐसे तत्त्व से साम्यता कराने की शक्ति एवं ऊर्जा प्रदान करती है, जोकि उन सबसे परम श्रे-ठ होता है। इस पहचान का निर्माण मूल्यों, विश्वासों, परम्पराओं, अभिसमयों, आदतों तथा व्यवहारों से बनी एक समान संस्कृति के विकास से होता है, जिससे नए सदस्यों को सम्प्रेि-ात किया जाता है, जोकि एक विशि-ट समुदाय की संस्कृति को प्राप्त करते हैं। एक विशि-ट संस्कृति में तत्त्वों से साम्यता कराने की प्रक्रिया में एक सशक्त भावनात्मक निवेश निहित है। रा-ट्रवाद के दृ-टिकोण से एक समान संस्कृति एक तरफ तो अपने समुदाय की कल्पना अन्यों से पृथक एक विशि-ट समुदाय के रूप में करने की अनुमति देती है।

तीसरा, रा-ट्रीय पहचान की रचना में चिह्न तथा रीतियाँ भी एक सशक्त भूमिका अदा करती हैं। एक समुदाय की रचना की चेतना का निर्माण चिह्नों के प्रयोग तथा रीतियों के बारम्बार दोहराये जाने से होता है, जोकि समुदाय के सदस्यों को शक्ति प्रदान करते हैं। एक रा-ट्र अपने को अन्यों से अलग स्थापित करता है - उन अवसरों को मनाकर, जिससे वे एकता महसूस करते हैं और उन चिह्नों को प्रदर्शित करके जोकि उस एकता को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, एक सैनिक अपने झण्डे का प्रदर्शन इसलिए करता है क्योंकि वह झण्डा उनके देश की पहचान है। फिर, झण्डे जैसे चिह्नों में विशे-ा स्मृतियों अथवा भावनाओं को उजागर करने की शक्ति होती है। इससे विभिन्न सांस्कृतिक स्तरों तथा सामाजिक पृ-ठभूमि के लोगों को जोड़ने की रा-ट्रवाद की क्षमता को सहायता मिलती है। चिह्नों से विभेद छुपते हैं और समानता पर ज़ोर दिया जाता है जिससे समूह की एक भावना का निर्माण होता है। अन्त में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समान संस्कृति को भोगने वाले तथा अपनी निश्चित भूमि से लगाव महसूस करने वाले व्यक्तियों का एक सांझा अतीत होता है तथा भवि-य के लिए एक सांझी परियोजना होती है और ऐसे व्यक्तियों को ऐसे अवसरों की आवश्यकता होती है जिसमें उनको एकता के सूत्रों में बाँधने वाले तत्त्वों पर ज़ोर दिया जाता है। ऐसे अवसरों में व्यक्ति अपने बारे में सब कुछ भूल जाता है और समूह से सम्बद्ध होने की भावना प्रमुख स्थिति ग्रहण कर लेती है। रीतियों के द्वारा व्यक्ति भावनाओं के अनोखे प्रवाह को महसूस करता है, जोकि उनके सत्त्व - रा-ट्र - से उनकी साम्यता से निकलती है और जोकि उनसे ऊपर है तथा जिसका कि वे अंश हैं।

अतः रा-ट्रवाद की शक्ति का प्रवाह तार्किक विचारों से ही नहीं, बल्कि एक विशे-ा समूह से सम्बद्ध होने की अनुभूति से निकलने वाले संवेगों की अतार्किक शक्ति से भी होता है। रा-ट्रवाद का यह दोहरा चेहरा उस आचरण का परिणाम होता है, जिसमें ये संवेग या तो एक रा-ट्र की मान्यता एवं विकास की तलाश करते हुए एक शान्तिपूर्ण तथा लोकतांत्रिक आन्दोलन में परिणित हो जाते हैं या वे दूसरे रा-ट्रों के प्रति घृणा की भावना में बदल जाते हैं। ऐसी स्थिति में रा-ट्रवादी भावना अपने रा-ट्र को अन्यों से ऊपर तथा विभेदों के उन्मूलन में विश्वास करती है।

23.3 रा-ट्रवाद के सिद्धान्त

रा-ट्रवाद के संदर्भ में वाद-विवाद का सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह रहा है कि रा-ट्र कब और कैसे प्रकट हुआ। दूसरे शब्दों में, रा-ट्रीय चेतना तथा भावना एक विकासवादी ऐतिहासिक निरन्तरता हैं, अथवा यह वाणिज्यवाद, औद्योगीकरण, शहरीकरण, राजनीतिक संस्कृति में जन भागीदारी जैसे आधुनिकवाद का परिणाम है। रा-ट्रवाद के विभिन्न सिद्धान्त इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन उनसे हमें अंतिम उत्तर नहीं मिलता। अध्ययन की सुविधा के लिए इन सिद्धान्तों को हम दो व्यापक श्रेणियों में बाँट सकते हैंः मौलिकवाद तथा आधुनिकवाद। मौलिकवाद रा-ट्रों के इतिहास पर केन्द्रित करता है, जोकि प्राचीन तथा अस्मरणीय हैं। मौलिकवाद रा-ट्र को एक सांस्कृतिक समुदाय, अस्मरणीय, जड़दार, सजीव (भा-ाओं पर आधारित नैसर्गिक) दरार रहित (वे समाज के एक समग्र के रूप में देखते हैं) और एक लोकप्रिय समुदाय के रूप में देखते हैं, जोकि जनता की आवश्यकताओं तथा आदर्शों का प्रतिबिम्ब होता है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों के लिए आनुवंशिक सम्बन्ध तथा संस्कृति अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दूसरी तरफ आधुनिकवादी रा-ट्र को एक राजनीतिक समुदाय - आधुनिक सामाजिक सृ-टि एवं रचना - के रूप में देखते हैं, जिसका निर्माण क्रान्ति एवं जनएकत्रीकरण (mass mobilisation) के युग के लिए किया गया। यहाँ रा-ट्र को विशि-ट वर्ग की सृ-टि के रूप में देखा जाता है, जिसका उद्देश्य जनता की भावनाओं तथा क्रियाओं को नियंत्रित तथा प्रभावित करना होता है। वे रा-ट्र को विभाजित और धर्म, लिंग तथा वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न सामाजिक समूहों के रूप में देखते हैं। इन सामाजिक समूहों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ होती हैं, और इसीलिए ये पृथक समूहों में बँटे होते हैं। आइए, इन सिद्धान्तों का विस्तृत अध्ययन करेंः

क) मौलिकवादी सिद्धान्त

- आदिम सिद्धान्त
- समाज-जीवविज्ञानीय

ख) आधुनिकीकरण सिद्धान्त

- सामाजिक संचार सिद्धान्त
- आर्थिकवादी सिद्धान्त - मार्क्सवाद एवं ग़ैर-मार्क्सवाद
- राजनीतिक - वैचारिक सिद्धान्त

23.3.1 मौलिकवादी सिद्धान्त

23.3.1.1 आदिम एवं समाज - जीव विज्ञानीय सिद्धान्त

मौलिकवादी सिद्धान्तों में हम आदिम एवं समाज - जीवविज्ञानीय सिद्धान्तों की चर्चा करेंगे। मौलिकवाद यह मानता है कि समूह की पहचान स्प-ट होती है; कि सभी समाजों में रक्त, जाति, भा-ाा, धर्म, क्षेत्र आदि के आधार पर कुछ मौलिक तथा अतार्किक लगाव होते हैं। ये, जैसा कि लिफर्ड गीरट्ज़ लिखते हैं, "वर्णनातीत लेकिन फिर भी बाह्य सम्बन्ध हैं, जोकि क्रिस्टलीकरण (crystallization) की एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम हैं।" अनन्य तौर पर न सही, लेकिन विशि-ट तौर पर तीसरी दुनिया के आधुनिक राज्य मौलिक वास्तविकताओं पर आधारित हैं। ये वास्तविकताएँ जातीय समूहों या समुदायों की हैं। मौलिकवादी यह विश्वास करते हैं कि मनु-यों के ऐतिहासिक अनुभवों में जातीय पहचान की जड़े गहरी होती हैं और व्यवहारिक तौर पर वे स्प-ट होती हैं। वे मानते हैं कि जातीय बंधन 'नैसर्गिक' होते हैं और मनु-यों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा अन्य प्राथमिक समूहों के भीतर के मूल अनुभवों के द्वारा सुनिश्चित किए जाते हैं। संक्षेप में, गीरट्ज़ के अनुसार (i) मौलिक पहचानें स्प-ट या नैसर्गिक होती हैं (ii) मौलिक पहचानें वर्णनातीत होती हैं, अर्थात् उन्हें सामाजिक अन्तर्संबंधों की चर्चा करते हुए समझाया या उनका परीक्षण नहीं किया जा सकता। लेकिन ये अवधारणाएँ बाध्यकारी होती हैं; और (iii) मौलिक पहचानों का मुख्य तौर पर सम्बन्ध भावनाओं अथवा लगावों से होता है।

समाज - जीव वैज्ञानिक एक कदम आगे जाते हैं। उनका उपागम इस धारणा से शुरु होता है कि रा-ट्रवाद सजातीय चयन के उस विस्तार का परिणाम है, जिसके द्वारा कल्पित अथवा समान वंश के व्यक्तियों को अपने जाति में शामिल किया जाता है। वह इस बात पर ज़ोर देता है कि रा-ट्रवाद 'आदिम मस्ति-क' को आधुनिक तकनीकियों से जोड़ते हुए तार्किक तथा अतार्किक तत्त्वों का संगम होता है। रा-ट्रवाद शब्द विभिन्न वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करता हैः देश के प्रति प्रेम, रा-ट्रीय पहचान तथा रा-ट्रीय गरिमा के साथ-साथ हिंसा तथा बलिदान द्वारा उन्हें प्राप्त करने और विदेशियों के प्रति घृणा का आवेश। रा-ट्रवाद अपने समहों के तथा बाहरी समूहों को प्रति नफरत की भावना से पनपता है। शॉ और ट्यूबा के अनुसार रा-ट्रवाद एक ही समूह के सदस्यों में गर्व, गरिमा तथा इसी तरह की अन्य भावनाओं को बढ़ाता है और इस तरह से "राजनीतिक" की माँग करने का नैतिक तथा दार्शनिक आधार का निर्माण करता है। उसकी जड़े भूतकाल में होती हैं लेकिन यह युद्ध के प्रति मानवीय सुझाव की भड़ास निकालने का समकालीन माध्यम है। इस संदर्भ में रा-ट्रवाद के मनोवैज्ञानिक आयाम पर ज़ोर देना महत्वपूर्ण होगा। व्यक्ति तथा रा-ट्र के मध्य इस विचार पर आधारित सम्बन्ध स्थापित होता है कि रा-ट्र परिवार का वृहत्त रूप है। व्यक्ति रा-ट्र के साथ अपनी पहचान करता है और इस तरह से अन्य रा-ट्रों की तुलना में उसे श्रे-ठ मानता है। रा-ट्र के साथ सजातीय शब्दों के व्यापक इस्तेमाल में इसी मनोवैज्ञानिक प्रभावी वास्तविकताओं के प्रतिबिम्ब मिलते हैं, जिसे भाईचारे के तत्त्वों से सुसज्जित 'मातृ देशभक्ति' कहा जाता है।

23.3.2 आधुनिकीकरण सिद्धान्त

रा-ट्रवाद के आधुनिकीकरण सिद्धान्त मुख्य तौर पर ज़ोर देते हैं कि रा-ट्रवाद एक आधुनिक घटना चक्र है और यह परम्परागत समाज के आधुनिक समाज में बदलीकरण की प्रक्रिया का परिणाम है। इनमें से कुछ सिद्धान्त विशि-ट तौर पर औद्योगीकरण के फैलाव पर केन्द्रित करते हैं और उनके साथ जुड़ी,

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक दशाओं को रा-ट्रवाद के विकास का मूल कारण मानते हैं। आधुनिकीकरण की वैचारिक जड़ें पुनर्जागरण, वैज्ञानिक क्रान्ति तथा प्रबोधन (Enlightenment) में मिलती हैं। आर्थिक स्तर पर आधुनिकीकरण व्यापार के विकास तथा उनके बाद औद्योगीकरण की प्रक्रिया में आया। राजनीतिक स्तर पर इसका अर्थ आधुनिक रा-ट्र-राज्य - एक केन्द्रीयकृत, नौकरशाह, प्रादेशिक, सम्प्रभु राज्य का प्रादुर्भाव था। जब आधुनिकीकरण को गैर-पश्चिमी देशों में लागू किया जाता है, तो उसमें आधुनिकता की कुछ विशे-ाताएँ जैसे व्यापारीकरण, नौकरशाहीकरण, धर्म-निरपेक्षता, शहरीकरण, जन संचार, साक्षरता शामिल हो सकती हैं, जबकि औद्योगीकरण की विशे-ाता प्रायः नहीं होती।

रा-ट्रवाद के आधुनिकीकरण के सिद्धान्त के कई रूपों में मिलते हैं। आइए, उनका हम विस्तार से अध्ययन करें।

23.3.2.1 सामाजिक संचार सिद्धान्त (ड्यूश, रस्टौव, राक्कन और एण्डरसन)

रा-ट्रवाद पर आधुनिकीकरण के प्रभाव पर एक अग्रगामी अध्ययन कार्ल ड्यूश की पुस्तक *नेशनलज़िम एण्ड सोशल कम्युनीकेशन* में किया गया है। यहाँ वे रा-ट्रों तथा रा-ट्रवाद की चर्चा परम्परागत से आधुनिक समाजों के बदलीकरण के संदर्भ में करते हैं। ड्यूश ने रा-ट्रीय समुदायों के निर्माण में संचार की केन्द्रीयता पर ज़ोर दिया। वे रा-ट्र को लोगों के एक ऐसे समूह से परिभाि-ात करते हैं, 'जोकि समूह के बाहर के लोगों से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी तथा तीव्रता से परस्पर संचार करते हैं।' वे राज्य के भीतर आंतरिक संचारों के विकास पर ज़ोर देते हैं, जोकि नैतिक तथा राजनीतिक पहचान की एक समान भावना का मार्ग प्रशस्त करती हैं। जैसा कि वे कहते हैं कि 'आधुनिक युग के राजनीतिक एवं सामाजिक संघ-ाों में रा-ट्रीयता का अर्थ मध्यम तथा निम्न वर्गों से एक बड़ी संख्या में व्यक्तियों का समरेखण है, जोकि सामाजिक संचार तथा आर्थिक समागम के माध्यम से प्रादेशिक केन्द्रों तथा अग्रगामी सामाजिक समूहों से जुड़े होते हैं। वे परस्पर अप्रत्यक्ष तौर पर और केन्द्र से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े होते हैं।' अर्थशास्त्र, इतिहास तथा जनांकिकी (demography) से प्राप्त अनेक प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग करते हुए ड्यूश यह बताते हैं कि व्यापारीकरण, औद्योगीकरण तथा शहरीकरण की प्रक्रिया के साथ चलते हुए भारी मात्रा में सामाजिक जुटाव और सामान्य साक्षरता तथा जनसंचार के विकास में रा-ट्रवाद के विकास के लिए उत्तरदायी थे।

एक दूसरे लेखक जिन्होंने आधुनिकीकरण तथा रा-ट्रवाद के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया, अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक डंकवार्ट रस्टौव हैं। अपनी पुस्तक *'ए वर्ल्ड ऑफ नेशन्स'* में वे लिखते हैं कि 'आधुनिकीकरण तथा रा-ट्रवाद के बीच अनिवार्य कड़ी श्रम के एक प्रबल विभाजन की आवश्यकता में निहित है।' समानता तथा नि-ठा जैसी रा-ट्र के लिए आवश्यक विशे-ाताओं का जन्म भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से हुआ। आधुनिकीकरण तथा रा-ट्रवाद परस्पर समीपता से जुड़े हैं तथा रा-ट्र-राज्य में उन्नत आधुनिकीकरण की प्राप्ति हेतु सर्वाधिक उपयुक्त राजनीतिक संरचनाएँ हैं।

एक दूसरे विचारक स्टीअन रॉक्कन ने एक *लॉगयू डूयरी* (*longue duree)* का प्रस्ताव किया है जोकि मध्य तथा प्रारंभिक आधुनिक कालों में कुछ महत्वपूर्ण तत्त्वों को स्थापित करता है। आधुनिक स्थिति

में वे उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दियों में तीव्र रा-ट्र निर्माण के लिए छह तत्त्वों को उत्तरदायी मानते हैंः (i) ग्रामीण तथा शहरी संसाधनों का इकट्ठा होना, (ii) औद्योगीकरण का विस्तार तथा स्थानीयकरण, (iii) राज्य के केन्द्रीयकरण तथा एकीकरण के लिए दबाव, (iv) साम्राज्यवादी प्रवृत्ति की ओर झुकाव, (v) जातीय/भा-ाई एकत्रीकरण (mobilization) के दौरान केन्द्र तथा परिधि (Periphery) में संघ-र्ा, और (vi) राज्य तथा चर्च में संघ-र्ा।

एक अन्य महत्वपूर्ण लेखक बेनेडिक्ट एन्डरसन ने अपनी पुस्तक *इमेजिन्ड कम्युनिटीज़* में सामाजिक संचार के मुद्दे पर ज़ोर दिया। उनके अनुसार रा-ट्रीय चेतना पूर्व-आधुनिक काल की तीन प्रमुख विशे-ाताओं की समाप्ति के कारण संभव हुईः पवित्र आलेखन (scripts), दैवीय राजा तथा इतिहास का सृ-टि-विज्ञान (cosmology) से सम्मिश्रण। एन्डरसन रा-ट्र को एक 'काल्पनिक राजनीतिक समुदाय' (सीमित तथा सम्प्रभु के रूप में कल्पित) के रूप में परिभा-ित करते हैं। रा-ट्रवाद के उदय से संबंधित उनके तर्क छपाई पूँजीवाद की केन्द्रीयता पर ज़ोर डालते हैं। पुस्तक पहली वस्तु थी, जिसका बड़ी मात्रा में उत्पादन किया गया था। यह एक ऐसा क्षेत्र था, जिसमें प्रारंभिक पूँजीवाद ने उत्पादन की नई प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके अधिक लाभ कमाया। रा-ट्रीय चेतना पर छपाई की भा-ाा का प्रभाव एक एकीकृत भा-ाा के निर्माण के माध्यम से महसूस किया, जिससे जनसंख्या का एक बड़ा भाग उसी लेखन को पढ़ सकता था और एक-दूसरे को पहचान सकता था। फिर भा-ाा को निश्चित करने से एक रा-ट्र की प्राचीनता के विचार को भी विकसित करना संभव था। एन्डरसन के अनुसार, नए समुदायों को जिसने कल्पना योग्य बनाया, वह उत्पादन की एक प्रणाली तथा उत्पादक सम्बन्धों (पूँजीवाद) के बीच एक अर्द्ध-चेतना और विस्फोटक परस्पर क्रिया थी। यह संचार की प्रौद्योगिकी तथा मानवीय भा-ाई विविधता के विध्वंसता का प्रतीक थी। इतिहास में बाद के समय में अपने देश तथा उपनिवेशों में राज्य एकत्रीकरण से लोगों के समूहों का निर्माण, हुआ जिन्होंने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक तौर पर अपने को पृथक महसूस किया। उन्होंने स्वयं की समुदाय के रूप में कल्पना की और विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त करने में सफल रहे।

23.3.2.2 आर्थिकवादी सिद्धान्त

आर्थिकवाद व्याख्या का एक अत्यंत लोकप्रिय तरीका है और इसीलिए मार्क्सवादी तथा ग़ैर-मार्क्सवादियों में उसका चलन है। आधुनिक साहित्य में व्याख्या की यह रूपरेखा कई स्वरूपों में प्रकट हुई है, लेकिन अंतिम परीक्षण में दोनों - मार्क्सवादी व ग़ैर-मार्क्सवादी - रा-ट्र-राज्य की विशि-टता का खण्डन करते हैं। रा-ट्र की आर्थिक अवधारणा का प्रारंभिक बिन्दु यह है कि रा-ट्रीय चेतना मौलिक तौर पर एक मिथ्या चेतना है और उसका प्रयोग आर्थिक शो-ाण, राजनीतिक शक्ति तथा सांस्कृतिक सर्वोच्चता को न्यायोचित ठहराने अथवा उनको छुपाने के लिए किया जा सकता है।

मार्क्सवादी सिद्धान्त रा-ट्रवाद को एक आधुनिक घटनाचक्र मानता है और पूँजीवाद के विकास तथा रा-ट्र के प्रकटीकरण के बीच सुस्प-ट सम्बन्ध स्थापित करता है। कार्ल मार्क्स के लिए भौगोलिक स्तर पर हो रहे वर्ग सम्बन्धों तथा वर्ग संघ-र्ा के परिप्रेक्ष्य में रा-ट्रों तथा राज्यों का अध्ययन होना चाहिए और इसी संदर्भ में उनका मूल्यांकन होना चाहिए। मार्क्स के अनुसार रा-ट्रवाद पूँजीपतियों के हितों की एक अभिव्यक्ति था। लेकिन पूँजीवादी 'पितृभूमि' का विचार न तो देश के विकास की संभावनाओं की ओर इंगित करता था और न ही यह विचार रा-ट्र को लोकतंत्र के रूप में ही देखता था। यह विचार संस्थाओं,

परम्पराओं, कानूनों एवं विचारों के योग को इंगित करता था, जोकि सम्पत्ति के अधिकार को एक बड़े पैमाने पर पवित्र बनाता था। मार्क्स तथा ऐंग्लस के लिए रा-ट्र सामाजिक अस्तित्व की कोई केन्द्रीय श्रेणी नहीं था, बल्कि वह तो पूँजीपतियों द्वारा निर्मित संक्रमणकालीन संस्था था। इसीलिए, यह लोकप्रिय वाक्य दिया गया, 'मज़दूरों की कोई पितृभूमि नहीं है।'

फिर भी मार्क्स तथा ऐंग्लस रा-ट्रवादी घटनाचक्र से भली-भाँति परिचित थे। राजनीतिक तौर पर वचनबद्ध बुद्धिजीवी के रूप में उन्होंने 1840 के दशक के संकट को जीता था, जबकि यूरोप में रा-ट्रीय संघ-र्षों ने तबाही मचा रखी थी। अपने रचनात्मक काल में इसीलिए उन्हें यूरोपीय लोगों की विविधता की रा-ट्रवादी माँगों को झेलना पड़ा। रा-ट्रवाद के प्रति उनके दृ-टिकोण को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि उन्होंने रा-ट्रों के अस्तित्व को इतिहास के उत्तरोतर मार्च के अधीन रखा। उनके अनुसार कुछ लोग बहुत पहले गुज़रे अतीत के जीवाश्म थे और इसीलिए वे वस्तुतः प्रतिक्रान्तिकारी थे। ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी रा-ट्रों को शक्तिशाली रा-ट्रों की वेदी पर बलिदान करना था। वैसे उन्होंने कुछ लेखों में रा-ट्रीय प्रश्न की प्रस्तुति राजनीतिक रंगमंच के एक अंग के रूप में की, लेकिन रा-ट्रवाद के घटनाचक्र के परीक्षण का कोई प्रयत्न नहीं किया। हाँ, उन्होंने उसे रा-ट्रीय चरित्र की सूखी रूढ़िबद्धता (crude stereotypes) के रूप में शायद समझने की कोशिश की।

मार्क्स ने रा-ट्रवाद के सिद्धान्त की प्रस्तुति तीन कारणों से नहीं की। पहला, उनके अनुसार किसी भी युग में समाज में स्थापित विचार शासक वर्ग के विचार थे। इसीलिए (रा-ट्रवाद जैसे) विचारों का फैलाव समाज में आर्थिक शक्ति के वितरण पर मुख्य तौर पर निर्भर करता था। दूसरा, मार्क्स के इतिहास को वर्ग संघ-र्ा के इतिहास के रूप में समझ में यह निहित था कि पूँजीवादी क्रान्ति के बाद सर्वहारा- वर्ग की क्रान्ति हो और एक साम्यवादी समाज की ओर प्रस्थान के लिए सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्थापित हो। मार्क्स के राज्यविहीन समाज में रा-ट्रवाद के लिए कोई जगह नहीं थी, क्योंकि रा-ट्र का उद्देश्य एक राज्य की स्थापना, न कि उसका उन्मूलन था। तीसरा, मार्क्स ने रा-ट्रवाद की ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनका यह विचार था कि न तो उत्पादन के पूँजीवादी सम्बन्ध, न ही रा-ट्रीयता, धर्म आदि जनता की मानव मात्र के रूप में मुक्ति में रुकावट बनें। सर्वहारा वर्ग को रा-ट्रीय पहचान से परे होना चाहिए और अपने को मनु-यता के बड़े परिवार का एक अंग मानना चाहिए।

लेकिन शताब्दी के अंत में रा-ट्रों के अधिकारों के पुन-टिकरण ने रा-ट्रीय प्रश्न पर मार्क्सवादी विचारों में परिवर्तन किया। दूसरे अन्तर्रा-ट्रीय में रा-ट्रीय प्रश्न का राजनीतिक एजेण्डा में केन्द्र का स्थान था। आस्ट्रो-मार्क्सवादी परम्परा के भीतर रा-ट्र के वर्ग द्वारा प्रस्तुत सैद्धान्तिक समस्याओं को समझने की कोशिश की गई। ओटो बोअर ने रा-ट्रीय चरित्र तथा रा-ट्रीय संस्कृति के विचार पर आधारित रा-ट्रवाद के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। लेकिन उन्होंने इस संदेहास्पद विचार का प्रयोग भी किया कि रा-ट्रों को एक ऐतिहासिक नियति को पूरा करना था। लेनिन ने रा-ट्र की और भी अधिक लचीली परिभा-ाा की। वैसे तो लेनिन अधिकांश मार्क्सवादियों की तरह बड़ी राजनीतिक इकाइयों की रचना के पक्ष में थे, लेकिन कम से कम सिद्धान्त में ही सही, उन्होंने उत्पीड़ित रा-ट्रों के आत्म निर्णय के विचार को पु-ट किया। स्टालीन ने रा-ट्रवाद की एक अधिक प्रभावी परिभा-ाा दी। 'मार्क्सवाद तथा रा-ट्रीय प्रश्न' में उन्होंने चार तत्त्वों (भा-ाा, भूमि, आर्थिक जीवन तथा मनोवैज्ञानिक रचना) के संस्कृति के एक ऐतिहासिक तौर पर निर्मित समुदाय में एक साथ सम्मिलन पर ज़ोर दिया।

1970 के दशक में संशोधित मार्क्सवादी विचार के अनुरूप रा-ट्र के एक सिद्धान्त को विकसित करने के कई प्रयत्न हुए। उनमें से सबसे प्रसिद्ध तीन थेः (i) आंतरिक उपनिवेशवाद, (ii) असमान विकास तथा (iii) विश्व प्रणाली।

आंतरिक उपनिवेशवाद के सिद्धान्त का विकास माइकल हेक्टर ने अपनी रचना *'इंटरनल कॉलोनीयलिज़्म'* में किया है। संक्षेप में, यह सिद्धान्त इस विचार पर आधारित है कि आधुनिक रा-ट्र जातीय आधारों (जैसे कि लैटिन अमेरिका में इण्डियनों, अमेरिका में काले लोग और स्काट्स में वेल्श व आइरिश लोग) पर प्रबल आंतरिक वि-ामताओं का प्रदर्शन करता है। औद्योगीकरण ने राज्यों के भीतर आर्थिक निर्भरता की तत्कालीन स्थिति तथा असमानता को गंभीर बनाया, जिसका प्रदर्शन शुरु में भिन्न राजनीतिक व्यवहार में और बाद में जातीय रा-ट्रवादी आन्दोलनों में हुआ। हेक्टर का विश्वास है कि प्रत्येक देश में ऐसे क्षेत्र हैं, जोकि पूँजीवादी विकास के लिए श्रेयस्कर हैं जबकि अन्यों की उपेक्षा होती है। हेक्टर इस बात का भी संकेत करते हैं कि रा-ट्रीय संस्कृति के बजाय एक प्रमुख (core) संस्कृति होती है, जोकि जातीय सीमाओं की स्थापना करते हुए अन्यों पर वर्चस्व रखती हैं। दूसरे शब्दों में, प्रमुख तथा परिधि में श्रम का सांस्कृतिक वितरण होता है; इसका अर्थ है कि स्तरीकरण की एक प्रणाली विकसित होती है, जिसके द्वारा प्रमुख में वर्चस्व प्राप्त समूह इस स्थिति में होता है कि वह समाज में उच्च प्रति-ठा वाली सामाजिक संस्थानों में एकाधिकार प्राप्त कर ले जबकि परिधि संस्कृति के सदस्यों को वे सामाजिक भूमिकाएँ मिलती हैं जिनको निम्न माना जाता है। जैसे-जैसे औद्योगीकरण की प्रगति असमान स्थिति में होती है, आंतरिक विभेद और अधिक गंभीर हो जाते हैं, और विदित निर्भरता तथा शो-ाण की स्थिति की प्रतिक्रिया में जातीय-रा-ट्रवाद का उदय होता है।

रा-ट्रवाद के मार्क्सवादी दृ-टिकोण का एक अच्छा वर्णन टॉम नेयरन ने अपनी पुस्तक *'द ब्रेकअप ऑफ ब्रिटेन'* में किया है। नेयरन रा-ट्रवाद को विश्व पूँजीवादी व्यवस्था में क्षेत्रों के असमान विकास की उपज के रूप में समझते हैं। वे रा-ट्रवाद को पूँजीवाद के विस्तार के प्रभाव के रूप में देखते हैं। यह मानते हुए कि मार्क्सवाद में रा-ट्रवाद के वि-ाय में कुछ नहीं बतलाया गया, नेयरन ज़ोर देते हैं कि असमान विकास की तबाहियों तथा विरोधाभासपूर्ण प्रभावों पर केन्द्रित करके हम रा-ट्रवाद को समझने की आशा कर सकते हैं। पूँजीवाद ने मनु-य-संसार को एकीकृत किया। लेकिन इसकी कीमत अत्याधिक असंतुलन तथा तीव्र संघर्-ा के रूप में चुकानी पड़ी जिससे सामाजिक-राजनीतिक विघटन की प्रक्रिया शुरु हुई। इससे पुरानो पर भी प्रभाव पड़ा। रा-ट्रवाद आधुनिक युग में भूमण्डलीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था के कुछ अंगों का परिणाम था। यह एक तरीका था, जिससे कुछ परिधि देशों ने प्रधान के विरुद्ध स्वयं को सुरक्षित पाया। ऐसा वर्चस्वशाली राज्य से अलग एक पहचान के आधार पर अन्तर्वर्गीय एकत्रीकरण द्वारा किया गया। अपनी आवश्यकता के कारण रा-ट्रवाद को प्रत्येक क्षेत्र की सांस्कृतिक विशि-टताओं के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करना पड़ा। नि-कर्-ा में, नेयरन के लिए रा-ट्रवाद विश्व स्तर पर पूँजीवाद के द्रुत निरोपण (accelerated implantation) की सामाजिक-ऐतिहासिक कीमत थी।

विश्व प्रणाली को समर्पित इम्मैनुयल वॉलरस्टीन ने अपनी रचनाओं में कहीं कहीं रा-ट्रीय प्रश्न पर अपने विचार दिए हैं। वॉलरस्टीन रा-ट्र के अवि-कृत अथवा निर्मित चरित्र पर ज़ोर देते हैं। उनके अनुसार 'रा-ट्र विश्व अर्थव्यवस्था के मौलिक संरचनात्मक विशे-ाताओं में से एक पर टिका हुआ है', और वह है 'इस ऐतिहासिक प्रणाली को राजनीतिक ऊपरी-ढाँचा अर्थात् सम्प्रभु राज्य' जोकि 'अन्तर्राजीय

व्यवस्था' से निर्मित व उत्पन्न हुए हैं। एक रा-ट्र विश्व प्रणाली के राजनीतिक संरचनाकरण से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में, राज्य रा-ट्र से पूर्व है। रा-ट्र किसी भी रूप में कोई मौलिक स्थिर सामाजिक वास्तविकता नहीं है, बल्कि वह तो पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक प्रति-ठापन जैसी जटिल घटना है।

रा-ट्रवाद पर एक दूसरा मौलिक उपागम का प्रतिपादन मिरोस्लाव रोच ने किया है। अपनी पुस्तक *'सोशल प्री-कण्डीशनस ऑफ नेशनल रीवाईवल ऑफ यूरोप '* में उन्होंने आधुनिक रा-ट्र के वर्गीय परीक्षण के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास की भूमिका का प्रस्ताव रखा है। वे आधुनिक समाज के विकास में वे तीन प्रमुख अवस्थाओं का वर्णन करते हैंः (i) प्रारंभिक काल जबकि सामंतवाद से पूँजीवाद का संक्रमण हुआ। इस अवस्था में निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध संघर्ा व पूँजीवादी क्रान्ति का प्रारंभ हुआ; (ii) दूसरे स्तर में पूँजीवाद की विजय और उनके संवर्धन के साथ-साथ एक संगठित श्रमिक वर्ग आन्दोलन का प्रकटीकरण हुआ; (iii) 20वीं शताब्दी के दौरान विश्व स्तर पर एकीकरण की प्रक्रिया तथा जनसंचार का अभूतपूर्व विकास सम्पन्न होता है। सांस्कृतिक स्तर पर प्रत्येक रा-ट्रीय आन्दोलन की तीन अवस्थाएँ होती हैंः (i) विद्धत्तापूर्ण रुचि की अवस्था, (ii) देश-प्रेम के आन्दोलन का काल, तथा (iii) जन आन्दोलन का काल।

लेकिन आमतौर पर मार्क्सवादी परम्परा रा-ट्रवाद को अत्यंत संदेह की नज़रों से देखती है। वैसे सामरिक कारणों की वजह से उन्होंने समाजवादी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु रा-ट्रवादी भावनाओं का उपयोग किया है। नि-क-र्ा में, टॉम नेयरन से हम सहमत हो सकते हैं कि 'रा-ट्रवाद का सिद्धान्त मार्क्सवाद की एक महान ऐतिहासिक असफलता का प्रतिनिधित्व करता है। 1960 के दशक की उन घटनाओं ने, जिनमें समाजवादी देश रा-ट्रवादी आधार पर परस्पर बुरी तरह से लड़े, कुछ मार्क्सवादियों की आँखे रा-ट्रीय हित की सच्चाई के प्रति खुली। 1989 में सोवियत गुट के विघटन और 1991 में सोवियत संघ के टूटने के बाद यह मुद्दा फिर से सामने आ गया। वर्तमान में, थोड़े से लोग ही विश्वास करेंगे कि मार्क्सवाद रा-ट्रवाद के एक सच्चे सिद्धान्त को प्रस्तुत कर सकता है।

23.3.2.3 गैलनर का रा-ट्रवाद का सिद्धान्त

वैसे तो गैलनर का सिद्धान्त कोई आर्थिक सिद्धान्त नहीं है और ए. डी. स्मिथ ने उसे सांस्कृतिक एवं भा-ाई सिद्धान्त की संज्ञा दी है, फिर भी वह यह मानते हैं कि रा-ट्रवाद एक औद्योगिक समाज का अनिवार्य परिणाम है, जिसे एक विशि-ट प्रकार की लचीली श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है। गैलनर 'पूँजीवाद' शब्द का प्रयोग नहीं करते और उसकी बजाय 'औद्योगिक समाज' शब्द का प्रयोग करते हैं। उनके अनुसार रा-ट्रवाद को औद्योगीकरण के प्रभाव, नवीन निर्मित औद्योगिक स्तरीकरण में वर्गों के मध्य प्रतिस्पर्द्धा और भा-ाा एवं शिक्षा के एकीकृत प्रभावों के संदर्भ में समझा जा सकता है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने परम्परागत सामाजिक संरचनाओं की उपेक्षा की और संचार जैसे सांस्कृतिक तत्त्वों को प्रमुखता प्रदान की। व्यक्ति की पहचान अब उनके सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर नहीं, बल्कि, उसकी संस्कृति के आधार पर की गई। संस्कृति और रा-ट्रीयता का सम्बन्ध अत्यंत निकटता का है। केवल राज्य ही एक शिक्षा प्रणाली तथा अधिकारिक भा-ाा के माध्यम से औद्योगीकरण के लिए आवश्यक सांस्कृतिक व्यक्ति प्रदान कर सकता था। यह भी एक सच्चाई थी कि औद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण असमान तरीके से फैले और उन्होंने सामाजिक स्तरीकरण की एक नई प्रणाली

को जन्म दिया। यह नई प्रणाली वर्ग व्यवस्था थी, जिसको उनके ग़ैर-कानूनीपन (illegitimacy) के कारण नापसन्द किया गया। यदि यह सांस्कृतिक विभेदों के साथ फैलती है तो सांस्कृतिक तौर पर विस्थापित प्रबुद्धों तथा अत्याधिक शोि-ात सर्वहारा वर्ग में एक अस्थिर मैत्री की वजह से एक रा-ट्र पृथक हो सकता है। गैलनर के अनुसार ये सामाजिक खाइयाँ (जोकि सांस्कृतिक विभेदों के कारण दुगुनी हो गई) थीं, जिन्होंने प्रारंभिक औद्योगिकवाद को जन्म दिया और उनके प्रसारण की असमानता ने रा-ट्र संघ-र्ों को गंभीर बना दिया। अतः रा-ट्रवाद की विशि-ट जड़ें औद्योगिक समाज की स्प-ट संरचनात्मक आवश्यकताओं में मिलती हैं।

रा-ट्रीय विकास के गैलनर के प्रतिमान ने दृढ़तापूर्वक इस बात पर ज़ोर दिया कि रा-ट्रवाद की जड़ें नवीन औद्योगिक व्यवस्था में है और इस व्यवस्था के आने से पहले के काल (कृि-ा प्रधान समाज) में रा-ट्रवाद जैसा कुछ नहीं था, क्योंकि राजनीति इकाइयों को सांस्कृतिक सीमाओं के अर्थ में परिभाि-ात नहीं किया गया था। चूँकि गैलनर के लिए रा-ट्र केवल रा-ट्रीयता के युग के संदर्भ में भी परिभाि-ात किया जा सकता है, इसलिए उनके लिए पश्चिम यूरोप में मध्यकाल के कृि-ा प्रधान समाज में राजतंत्र के वैधीकरण को सुनिश्चित करने के लिए प्रबुद्धों द्वारा रचित रा-ट्र की काल्पनिक छवि के रूप में चिन्तन करना संभव नहीं है। उनका अन्य ज़ोर जनसंख्या विस्फोट, तीव्र शहरीकरण, श्रम प्रवासन, भूमण्डलीय अर्थव्यवस्था का स्थानीय अर्थव्यवस्था में भेदन आदि जैसे आधुनिकीकरण के स्वरूपों पर है। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद की तरह प्रोटैस्टेण्ट सुधार का भी रा-ट्रवाद पर प्रभाव पड़ा होगा।

23.3.2.4 राजनीतिक-वैचारिक सिद्धान्त

आर्थिकवादी सिद्धान्तों के अलावा रा-ट्रवाद के अनेक राजनीतिक-वैचारिक सिद्धान्त हैं। इन सभी सिद्धान्तों की एक समान विशे-ाता यह है कि वे आधुनिक काल में रा-ट्रवाद के विकास में राज्य को एक प्रमुख भूमिका प्रदान करते हैं। इन सिद्धान्तों में हम जॉन ब्रेयुली, एंथोनी गिड्डन्स, पॉल ब्रास तथा माईकल मैन्न के विचारों का अध्ययन करेंगे।

जॉन ब्रेयुली अपनी पुस्तक *'नेशनलिज़्म एण्ड स्टेट'* में मध्यकालीन यूरोप में रा-ट्रों तथा रा-ट्रीय भावनाओं के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और उसे (रा-ट्र को) आधुनिक राज्य तथा अन्तर्रा-ट्रीय राज्य प्रणाली के विकास के साथ जोड़ते हैं। रा-ट्रवाद को राजनीति के एक प्रकार के रूप में समझा जाता है, जिसका जन्म राज्य के विकास के साथ होता है। दूसरे शब्दों में, अपने सम्पूर्ण इतिहास में राज्य ने रा-ट्रवादी नीतियों को आकार दिया है। गिड्डन्स रा-ट्र को चिह्नों तथा विश्वासों के रूप में परिभाि-ात करते हैं, जिनका प्रचार विशि-ट वर्ग समूहों द्वारा किया जाता है अथवा जिन्हें जनसंख्या के प्रादेशिक, जातीय या भा-ाई श्रेणियों के सदस्यों द्वारा मान्य किया जाता है और जिनका अर्थ उनके बीच एक समुदाय का होना होता है। गिड्डन्स के अनुसार रा-ट्रवाद एक आधुनिक घटनाचक्र है, जोकि फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप शुरु हुआ। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यूरोपीय रा-ट्रवाद अपने आपमें अनोखा है और उसका अन्य क्षेत्रों में सामान्यीकरण 'विश्व समय' (यह नाम उन्होंने दिया है) के संदर्भ के बिना नहीं किया जा सकता। रा-ट्रवाद कुछ आवश्यकताओं तथा प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया था, जिसका प्रकटीकरण तब हुआ जबकि समय एवं अंतरिक्ष के जन विक्रयवस्तुकरण के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी सत्तामूलक (ontological) सुरक्षा खो बैठा। इसके साथ-साथ वे यह भी मानते हैं कि

रा-ट्रवाद वर्ग प्रभुत्व से जुड़ा हुआ है, तथा पूँजीवाद के असमान विकास ने प्रतिपक्षीय रा-ट्रवाद के उदय को दृढ़ता से प्रभावित किया।

एक अन्य लेखक पॉल ब्रास ज़ोर देते हैं कि जातीयता तथा रा-ट्रवाद आधुनिकता के उत्पादन हैं। वे उनके निर्मित चरित्र को रेखांकित करते हैं। उनके अनुसार संस्कृतियों का निर्माण विशि-ट वर्ग समूहों द्वारा होता है, जोकि विभिन्न समूहों से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग जातियों तथा रा-ट्रों के निर्माण में करते हैं। उनका उपयोग करते हुए वास्तव में विशि-ट वर्ग अपने लिए आर्थिक अथवा राजनीतिक लाभ सुनिश्चित करते हैं। ब्रास का सिद्धान्त यह बतलाता है कि जातीय पहचान तथा आधुनिक रा-ट्रवाद का उदय केन्द्रीयकृत राज्यों तथा ग़ैर-प्रभुत्वशाली जातीय समूहों के विशि-ट वर्गों में विशे-ा प्रकारों की पारस्परिक क्रिया से होता है। ये ग़ैर-प्रभुत्वशाली जातीय समूह अपने राज्यों की, विशे-ा रूप से (लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे एकमात्र समूह हों), परिधियों में होते हैं।

माइकल मैन्न स्वयं को आधुनिकतावादी मानते हैं। लेकिन फिर भी वे आधुनिक युग के पहले जागरूक जातीयता व आदिम-रा-ट्रों के अस्तित्व को न्यूनाधिक स्वीकार करते हैं। रा-ट्रवाद के विकास को समझने के लिए सामाजिक शक्तियों के चार स्रोतों को देखना होगा। ये चार स्रोत हैंः आर्थिक, राजनीतिक, वैचारिक तथा सैन्य। प्रथम चरण में, जोकि 16वीं शताब्दी में शुरु हुआ, वैचारिक शक्ति का आधिपत्य था। यह धर्म के रूप में थी और इसने प्रोटैस्टेण्ट इंग्लैण्ड जैसे आदिम-रा-ट्र को स्वरूप प्रदान किया। दूसरा चरण 1700 से प्रारंभ हुआ और इसे 'व्यापारिक राज्यवाद' के रूप में परिभाि-ात किया जा सकता है, इस चरण में आदिम-रा-ट्रीय पहचानें में और विस्तार हुआ। यह चरण एन्डरसन के 'छपाई पूँजीवाद' के लगभग समान है। तीसरे चरण में सैन्य शक्ति ने वर्चस्व स्थापित किया और रा-ट्रत्व की भावना को बढ़ावा मिला। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से अधिकांश पश्चिमी रा-ट्र सामने आ चुके थे। अंत में रा-ट्र के औद्योगिक चरण ने तीन प्रकार के रा-ट्रों को प्रोत्साहित किया; राज्य बलवर्धक, राज्य रचनात्मक तथा राज्य विध्वंसक। मैन्न के अनुसार रा-ट्र का प्रकटीकरण राज्य के भारी हस्तक्षेप के साथ हुआ; वास्तव में वह काफी बाद में आया। मैन्न के अनुसार इसके दो प्रमुख कारण थेः एक व्यापारिक पूँजीवाद का उदय तथा दूसरा आधुनिक राज्य तथा उनके साथ उसकी व्यवसायिक सेना तथा प्रशासकों का उदय। वित्त-सैन्य दवाब के साथ जुड़कर तथा भू-राजनीति के ज़ोर देने से उन्होंने लोकप्रिय प्रतिनिधित्व की राजनीति का निर्माण किया और इसी से आधुनिक रा-ट्रवाद की अनेक विविधताओं की रचना हुई।

संक्षेप में, रा-ट्रवाद एक आधुनिक घटनाचक्र है। लेकिन उनके उदय में अनेक जटिल तत्त्वों की भूमिका रही है।

23.4 रा-ट्रवाद का उदय एवं विकास

ऐतिहासिक तौर पर रा-ट्रवाद यूरोप में रा-ट्र-राज्यों के उदय का उत्पादन है। अपने शुरुआती चरण में इसे यूरोप के निरंकुश राजतंत्रों के समतुल्य माना गया। 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों में इसने एशिया तथा अफ्रीका में उपनिवेशों को पाने के संघ-ार्ा के साम्राज्यवादी स्वरूप को धारण किया; 19वीं शताब्दी में उन्होंने स्वयं को उदारवाद, प्रजातंत्र, संविधानिकवाद और नागरिक स्वतंत्रताओं से जोड़ा। उन्होंने यूरोप के पुनर्संगठन, जर्मनी तथा इटली के एकीकरण तथा हैप्सबर्ग व औटोमन साम्राज्यों के विघटन

में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् उन्होंने फात्सीवाद के रूप में आक्रमक तथा जातीय का स्वरूप ग्रहण किया। 20वीं शताब्दी के दौरान उन्होंने एशियाई तथा अफ्रीकी देशों में रा-ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों के माध्यम से एक नवीन जागरण का सूत्रपात किया। शीत युद्ध के उपरांत सोवियत संघ के विघटन तथा अनेक नवीन राज्यों के उदय ने एक राजनीति शक्ति के रूप में रा-ट्रवाद के वर्चस्व का एक बार फिर प्रदर्शन किया है।

रा-ट्रवाद ने आधुनिक रा-ट्र-राज्यों से अभिव्यक्ति प्राप्त की है जोकि अनेक शक्तियों तथा संघ-र्षों का परिणाम हैं। रा-ट्रवादी राज्यों के उदय के लिए उत्तरदायी प्रमुख तत्त्व निम्न हैं:

i) व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति का वातावरण, जोकि पुनर्जागरण तथा धर्म-सुधार आन्दोलन की विशे-ाता थी।

ii) चर्च की सर्वव्यापक सत्ता का विघटन।

iii) शान्तिपूर्ण तथा लाभकारी व्यापार के परिचालन के लिए उभरते व्यापारिक वर्गों की समान व्यापारिक अधिनियमों व्यापार पर सामंतीय रुकावटों के उन्मूलन जैसी दशाओं की इच्छा।

iv) खून तथा हिंसा के उस युग में शान्ति, व्यवस्था तथा सुरक्षा की इच्छा।

v) राजाओं की व्यक्तिगत अभिला-ाा जिन्होंने अधिक शक्तिशाली सामंतों के विरोध में उभरते हुए व्यापारिक वर्ग से मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया।

vi) क्षेत्रीय सम्प्रभुता का सिद्धान्त, जिसने राजाओं को विरोधी अथवा धार्मिक सत्ताधिकारियों के दावे के विरुद्ध संघर्-ा में एक सुविधाजनक हथियार दिया। एक स्प-ट रा-ट्रीय क्षेत्र में एक एकीकृत विधि प्रणाली का विचार जो कि व्यवस्था, निरंतरता तथा समस्त सामाजिक सम्बन्धों के प्रबंध में निश्चितता प्रदान करे, का विचार काफी आक-र्ाक था।

ऊपर दिए गए तत्त्वों के आधार पर रा-ट्रीयता की रूपरेखा पर इंग्लैण्ड तथा पश्चिमी यूरोप में राज्यों का विकास प्रारंभ हुआ और शीघ्र ही उसका विस्तार विभिन्न महाद्वीपों तथा क्षेत्रों में हो गया। इस घटनाचक्र की स्प-ट जानकारी के लिए हम निम्न शी-र्ाकों में उसे बाँटकर उसका अध्ययन कर सकते हैं।

i) पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी यूरोप में रा-ट्र-राज्य का विकास।

ii) अमेरिका में रा-ट्र-राज्य

iii) एशिया तथा अफ्रीका में पूँजीवाद विरोधी आन्दोलन

23.4.1 यूरोप में रा-ट्र-राज्य

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है कि रा-ट्र-राज्य का निर्माण धर्म सुधार आन्दोलन, पुनर्जागरण तथा व्यापारिक क्रान्ति के संयुक्त प्रभाव से हुआ। चर्च की सत्ता में पतन ने व्यक्ति की नि-ठा का प्रश्न उठाया। व्यक्ति ने पवित्र रोमन साम्राज्य से अपनी नि-ठा का अंत करके उसे सम्राट को प्रदान की,

जोकि रा-ट्र के चिह्न तथा उनके एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में उभर रहा था। इन राजतंत्रों ने एक समान भा-ा, धर्म, संस्कृति इत्यादि से एकीकृत क्षेत्रों में अपनी शक्ति का दृढ़ीकरण किया। ऐसी रा-ट्रीयताओं ने राज्य का स्वरूप प्राप्त करना शुरु किया। राज्य इन रा-ट्रीयताओं का प्रतिनिधित्व करता था। इसके परिणामस्वरूप रा-ट्र-राज्य की अवधारणा में एक नए सिद्धान्त को लागू किया गया। इस अवधारणा ने पवित्र रोमन साम्राज्य को तिरस्कृत तथा रा-ट्रीयता के आधार पर राज्यों के निर्माण का समर्थन किया।

एक रा-ट्र जिसका प्रतिनिधित्व राजा करता था, के प्रति नि-ठा का उदय होना शुरु हुआ तथा उसका शक्तिशाली प्रभाव पड़ा। इससे पहले भी अंग्रेज़ी, फ्रैंच, स्पैनिश तथा जर्मन रा-ट्रीयताएँ थी लेकिन उनके बंधन का आधार धर्म था। चर्च की शक्ति के टूटने तथा राजा की सत्ता के अंतर्गत रा-ट्रीय चर्च की स्थापना ने रा-ट्र-राज्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस कार्य की पहल इंग्लैण्ड ने की, जिसका फ्रांस ने अनुसरण किया। हेनरी सप्तम तथा फिलिप्स द्वितीय निरंकुश राजा थे, जिन्होंने सामंतवाद तथा समाज में सत्ता की बहुलता का विनाश किया और शक्तिशाली केन्द्रीकृत राज्यों की स्थापना की। इस तरह से एक प्रथक तथा स्वतंत्र रा-ट्रीय पहचान का उदय हुआ, जिसका प्रतिनिधित्व एक शक्तिशाली राजा करता था। इस राज्य ने व्यक्ति को चर्च तथा राज्य की दुहरी नि-ठा से मुक्ति प्रदान की। इस चरण में रा-ट्र-राज्य का अर्थ शासितों को रा-ट्रीयता का प्रतिनिधित्व करने वाले राजा के प्रति व्यक्ति की आधीनता से था।

इस काल में उपनिवेशवाद के रूप में एक नई घटना घटी। इसका विस्तार पूर्वी तथा पश्चिमी दिशाओं अर्थात् एशिया तथा अमेरिका में हुआ। महान खोजें साहसी व्यक्तियों की उपलब्धियाँ थी। उनका समर्थन राजाओं ने किया और बदले में उनसे उन्हें वित्तीय लाभों की आशा थी। रा-ट्र-राज्यों में अधिकाधिक उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए विस्तीर्यमान प्रतिस्पर्द्धा से रा-ट्र के भीतर केन्द्रीयकरण तथा एकता में और बढ़ोत्तरी हुई। इससे रा-ट्रवाद की भावना भी बलवती हुई। नवीन उपनिवेशों को प्रादेशिक तौर पर अधीन करने या उन पर विदेश से शासन करने का कोई इरादा नहीं था। उन्हें तो प्रारंभिक चरण में व्यापार के केन्द्र और औद्योगिक क्रान्ति के युग में कच्चे माल के स्रोत तथा बाज़ार के रूप में कार्य करना था। औद्योगिक क्रान्ति ने एक नई अर्थव्यवस्था तथा एक नए वर्ग-पूँजीपति वर्ग - को जन्म दिया। इस पूँजीपति वर्ग के हितों तथा निरंकुश राजतंत्र के हितों में संघर्ा था। राजा तथा पूँजीपति वर्ग के संघर्ा को प्रजातंत्र के माध्यम से सुलझाया गया। इससे रा-ट्र-राज्य को एक नया अर्थ मिला। अब रा-ट्र-राज्य का मतलब राजा के प्रति नि-ठा नहीं, बल्कि उस सरकार के प्रति नि-ठा थी जोकि जनता से सलाह करती थी और उनके हाथों में वास्तविक सत्ता प्रदान करती थी। प्रतिनिधि संस्थाओं ने रा-ट्रवाद की विचारधारा को एक नवीन तथा ठोस आधार दिया।

18वीं शताब्दी के अंतिम छोर में सम्पन्न फ्रांसीसी क्रान्ति रा-ट्र-राज्य के उदय तथा विकास में एक मोड़ थी। अब रंगमंच केन्द्रीय यूरोप में स्थानांतरित हो गया। रा-ट्रीय सभा की घो-णा, मनु-य के अधिकार, रा-ट्र में सम्प्रभुता का व्यवस्थित होना, सामंतीय विरासतों का उन्मूलन, रा-ट्रीय ऋण चुकाने के लिए चर्च की सम्पत्ति का ज़ब्त होना, रा-ट्रीय शिक्षा नीति, रा-ट्रीय झण्डा तथा रा-ट्रीय गान की रचना और रा-ट्र की कीर्ति के लिए लड़े गए युद्ध - इन सबने रा-ट्रवाद को फ्रांस में शिखर पर चढ़ा दिया। 1792 में जब नैपोलियन बोनापार्ट ने रा-ट्रीय क्रांतिकारी संघर्ाों की शुरुआत की, तब यूरोप में रा-ट्रीय चेतना का लगभग अभाव था। लेकिन जैसे जैसे रा-ट्रीय युद्ध बढ़े और बेल्जियम, हॉलैण्ड, जर्मनी तथा इटली

फ्रांसीसी अधिकार में आए, इससे एक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई जिसकी अभिव्यक्ति रा-ट्रवाद में हुई। जर्मन रा-ट्रवाद का उत्थान हुआ। 1806 में जर्मनी की पराजय ने फिशे तथा हेगेल को फ्रांस का कट्टर शत्रु और जर्मन रा-ट्रवाद का उग्र समर्थक बना दिया। इससे इस भावना का उदय हुआ कि दर्शन की कीमत पर राजनीति की उपेक्षा नहीं की जा सकती। नेपोलियन के युद्धों ने जर्मन राज्य की रा-ट्रीय चेतना को जाग्रत करने में अत्याधिक सहयोग दिया। जर्मन राज्य फ्रांस तथा इंग्लैण्ड के समान स्तर पर खड़ा होना चाहता था। फिशे का यह विचार था कि आर्थिक प्रगति राजनीतिक एकता का आधार थी और इसे केवल राज्य-समाजवाद द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। हेगेल द्वारा प्रतिपादित रा-ट्र की अवधारणा और लैसले (Lassale) तथा बिस्मार्क के राज्य - समाजवाद की जड़ें फिशे में थी। जर्मन रा-ट्र-राज्य सिर्फ एक राजनीतिक सिद्धान्त ही नहीं था, बल्कि वह तो जीवन के एक दर्शन के रूप में उभरा। हेगेल ने राज्य को रा-ट्र की इच्छा से जोड़ा। उन्होंने राज्य को पृथ्वी पर ईश्वर का मार्च कह कर पुकारा और रा-ट्र को एक रहस्यमय आधार देकर एक निरंकुश राज्य को न्यायोचित्त ठहराया, जिसका कि 20वीं शताब्दी में नात्सीवाद ने रा-ट्रीय समाजवाद के नाम पर दुरुपयोग किया।

पूर्वी यूरोप में रा-ट्र-राज्य की स्थापना किसी केन्द्रीकृत सत्ता के अन्तर्गत नहीं हुई। शुरु से ही रा-ट्रीय चेतना को फैलाने के लिए किसी राजनीतिक संगठन के अभाव के कारण, ये राज्य तीन साम्राज्यों - हैप्सबर्ग, औटोमन तथा एशियन - के अधीन थे। ये सभी साम्राज्य अपनी जनता में रा-ट्रीय भावना फैलाने में असफल रहे। 19वीं शताब्दी में शे-ा यूरोप में सम्पन्न हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों की प्रतिक्रिया पूर्वी भाग में भी हुई। जनता के अनेक हिस्सों ने रा-ट्रीयता के दृ-टिकोण से यह महसूस करना शुरु किया कि वे राजा से भिन्न ही नहीं हैं, बल्कि यह तथ्य भी कि शासन के दमनात्मक स्वरूप को भी सहन नहीं किया जा सकता। इन लोगों ने रा-ट्रीयताओं के निर्णय के सिद्धान्त का स्वागत किया क्योंकि इस सिद्धान्त की सहायता से वे निरंकुश शासन से मुक्ति पा सकते थे। अतः दमनात्मक शासन से मुक्ति पाने का संघर्-ा 19वीं शताब्दी में शुरु हुआ तथा 20वीं शताब्दी में चलता रहा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान नई रा-ट्रीयताओं का प्रश्न था, जोकि अपने नवीन राज्य की स्थापना करना चाहते थे। युद्ध ने रा-ट्र-राज्यों के पक्ष में निर्णय दिया। यूरोप का मानचित्र फिर से बनाया गया। ऑस्ट्रो-हंगरी साम्राज्य तथा ओटोमन साम्राज्य का विघटन हुआ। छह नए राज्यों - युगोस्लाविया, रोमानिया, ग्रीस, इटली, डेनमार्क तथा फ्रांस - की सीमाएँ बढ़ीं। आस्ट्रियन, हंगरी तथा टर्की साम्राज्यों को तोड़कर रा-ट्रीयताओं के आधार पर राज्यों की रचना हुई। पेरिस की संधि ने यूरोप के सर्वव्यापी कानून के अंग के रूप में रा-ट्रीयताओं के सिद्धान्त को स्वीकार किया। प्रथम विश्व युद्ध ने रा-ट्रीयताओं के आत्म निर्णय के अधिकार को एशिया तथा अफ्रीका में भी लागू करने की सिफारिश की।

23.4.2 अमेरिका में रा-ट्र-राज्य

यूरोप में जहाँ रा-ट्र-राज्य का अर्थ पारस्परिक स्वतंत्रता तथा सुरक्षा के आधार पर एक केन्द्रीकृत राज्य से था, अमेरिका में इसका अर्थ बिल्कुल ही अलग था। अमेरिकी उपनिवेशों ने यह महसूस किया कि उनके समस्त प्रयत्नों तथा खोजों से गृह देशों में समृद्धि आई थी। जब वे जागरूक हुए, वे अपने लाभ के लिए नहीं बल्कि उनके फायदे के लिए, जिन्होंने कभी अपना देश नहीं छोड़ा, तब उन्होंने विद्रोह कर दिया। उनका पहला नारा था, 'प्रतिनिधित्व के बिना कोई करारोपण (taxation) नहीं' जोकि बाद में स्वतंत्रता के पूर्ण युद्ध में बदल गया। इसके परिणामस्वरूप नए राज्य तथा नई रा-ट्रीय पहचानों की रचना हुई। रा-ट्रीय भावना तथा स्वतंत्रता और स्वार्थ के बीच विरोधाभास में से उन्हें पुराने सम्बन्धों को

तोड़ने तथा नए सम्बन्धों को बनाने के लिए मज़बूर होना पड़ा। अतः, रा-ट्र-राज्य का अर्थ था - पुराने रा-ट्रीय बंधनों को तोड़ना तथा नई बंधनों की रचना करना। इसने औपनिवेशिक शासन का अंत किया तथा अमेरिकी महाद्वीप में अनेक रा-ट्र-राज्यों की रचना हुई।

23.4.3 उपनिवेश-विरोधी रा-ट्रवाद

20वीं शताब्दी में दो महायुद्धों के मध्य रूसी क्रान्ति तथा नात्सीवाद का उदय - ये दो महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं, जिनकी वजह से रा-ट्रवादी विचारों का फैलाव यूरोप से एशिया, अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका के ग़ैर-यूरोपीय क्षेत्रों में हुआ। सामूहिक तौर पर उन्होंने एशिया तथा अफ्रीका में रा-ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों की प्रक्रिया को प्रारंभ किया, जिसके फलस्वरूप यूरोप की साम्राज्यवादी शक्तियों से अनेक देशों ने स्वतंत्रता प्राप्त की। इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने रा-ट्रवाद के एक नए स्वरूप को विकसित करने में अहम भूमिका निभाई। चीन, भारत, पाकिस्तान, मिस्र, वियतनाम जैसे नए राज्य विश्व रंगमंच पर विकसित हुए और इससे रा-ट्रवाद की अवधारणा को नए अर्थ मिले। वे परिस्थितियाँ जिन्होंने उन्हें जन्म दिया, पश्चिम की परिस्थितियों से बिल्कुल अलग थीं। ये वे देश थे, जिनको कि इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, हॉलैण्ड आदि साम्राज्यवादी शक्तियों ने अधीन किया था और उनकी अर्थव्यवस्था का शो-ाण हुआ था। साम्राज्यवादी देशों ने उन्हें अपनी निजी सम्पत्ति माना, जिसको उन्होंने बेचा और लूटा। उन्होंने उनकी स्वतंत्रता का विनाश किया और ऐसी कठपुतली सरकारों का निर्माण किया जो कि इतनी कमज़ोर थीं कि उनसे साम्राज्यवाद को कोई नुकसान नहीं हो सकता था।

भारत, चीन तथा अरब प्रदेशों में रा-ट्रवाद को नए स्वरूप तथा उसकी अवधारणा को एक नया अर्थ मिला। वैसे तो नए राज्यों का आधार बनी रा-ट्रवाद की इस अवधारणा ने अपनी काफी विचारधारा तथा राजनीतिक सिद्धान्त पश्चिम से लिया, लेकिन उन्होंने इस सिद्धान्त को अपने ऐतिहासिक अनुभवों, अपनी विशि-ट परिस्थितियों तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने विद्रोह के अनुरूप लागू किया। इस नए रा-ट्रवाद का आधार यह था कि यह साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में सहजवृत्ति तथा विदेशियों से घृणा भावना से ओतप्रोत था, जिसमें साम्राज्यवाद के प्रतिनिधियों, उनके रा-ट्रिकों तथा उनके साथ सम्बन्धित सभी लोगों के प्रति घृणा की भावना थी। यह उन लोगों के प्रति सिर्फ घृणा थी, जिन्होंने उनकी (घृणा करने वाले व्यक्तियों की) ज़मीन पर बलात कब्ज़ा कर लिया था, जिन्होंने उनकी सरकार को तहस-नहस कर दिया था, उनकी समृद्धि का बलपूर्वक शो-ाण किया था, उनकी जनता को गुलाम बनाया था और जिन्हें विनाश, लूट और चोरी करने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी। इस घृणा की हिसांत्मक अभिव्यक्ति विनाश तथा हत्याओं में हुई जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में बॉक्सर विद्रोह में हुआ या शान्तिपूर्ण तथा अहिंसक रूप में हुई, जैसा कि भारत में गांधी के नेतृत्व में हुआ। इन राज्यों में साम्राज्यवाद के बारे में चेतना थी और उनका उद्देश्य उसका विनाश था। उनके विनाश के साथ-साथ उससे संबंधित बुराइयों जैसे पराजय, दमन, गुलामी, स्वतंत्रताओं का गला घोंटना, समृद्धि का शो-ाण और जातीय, प्रादेशिक, साम्प्रदायिकता तथा वर्ग विभेदों के आधार पर बीजारोपण का विनाश भी उद्देश्य था। यहीं नहीं, यहाँ पर रा-ट्रवाद एक निर्माणात्मक शक्ति थी, जिसका लक्ष्य स्वतंत्रता, स्वाधीनता, आर्थिक न्याय एवं रा-ट्रीय एकता जैसे सिद्धान्तों के आधार पर एक रा-ट्र का निर्माण था। उन्होंने रा-ट्रीय एकता को एक निर्माणात्मक शक्ति के रूप में देखा, जोकि जनता को रा-ट्रीय पुनर्निर्माण में अपने अंश का योगदान करने की स्फूर्ति प्रदान करती थी। इस एकता के दो अर्थ थे - (i) भौगोलिक अंशों की एकता तथा (ii) धर्म, वर्ग, जाति, तथा साम्प्रदायिक तत्त्वों की विविधता के साथ एकता। इन राज्यों ने सभी वर्गों, जातियों तथा समूहों के कल्याण का वचन दिया क्योंकि सभी ने स्वतंत्रता संग्राम

में भाग लिया था और अपना भरपूर योगदान किया था। अन्तर्रा-ट्रीय दृ-टिकोण से इन रा-ट्र-राज्यों ने सैनिक आधारों, अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप, रंगभेद का विरोध किया और गुट निरपेक्षता तथा अन्तर्रा-ट्रीय सहयोग पर विश्वास किया।

उपनिवेशवाद विरोधी रा-ट्रवाद की एक खास विशे-ाता यह रही है कि अधिकांश मामलों में ऐसा कोई आशय नहीं है, जिसमें कि राज्य के उदय के पूर्व रा-ट्र हो। यहाँ पर प्रारंभिक रा-ट्रवाद तथा बाद के रा-ट्रवाद के बीच अन्तर किया जा सकता है। रा-ट्रवाद के प्रारंभिक रूप में वह साम्राज्यवादी शासकों के विरुद्ध तथा स्वतंत्रता संग्राम में लिप्त एक आन्दोलन था। बाद में रा-ट्रवाद को नए नेताओं ने एक राजनीतिक सिद्धान्त के रूप में अपनाने की कोशिश की, ताकि साम्राज्यवाद काल से विरासत में मिले राज्य के वैधीकरण (legitimacy) को टिकाऊ बनाए रखने योग्य एक रा-ट्र का निर्माण किया जा सके। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, इन औपनिवेशिक राज्यों ने नये (घटक) राज्यों का निर्माण किया, उनकी सीमाएँ बनाईं, उनकी राजधानियाँ निर्मित कीं और अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप केन्द्रीय प्रशासन तथा राजनीतिक संस्थाओं की रचना की। परिणामस्वरूप, प्रत्येक उपनिवेश 'समान सीमाओं में इकट्ठे किए गए लोगों' तथा पुराने राज्यों या उनके टुकड़ों का संग्रह था। ये सभी राज्य भिन्न जातीय सम्प्रदायों तथा कबीलों की एक चित्रकारी थी। राज्य की यही कृत्रिम तथा आरोपित चरित्र था, जोकि स्वतंत्रता के बाद इन राज्यों में अधिकांश संकटों का कारण बना। इन राज्यों की सबसे बड़ी समस्या उनकी नाजुकता है। नवीन समर्पित रा-ट्र-राज्यों ने पूर्व रा-ट्रवादी बंधनों के स्थान पर रा-ट्रीय पहचान तथा नि-ठा की भावना को बैठाने का संघर्-ा शुरु किया। लेकिन अनेक मामलों में स्वतंत्रता के उत्सव की खुशियों में खट्टापन आ गया। इसका कारण नए राज्यों का आर्थिक पिछड़ापन दूर करने में असफलता तथा अपनी जनता में एक सामंजस्यपूर्ण नागरिक समाज के निर्माण में कठिनाइयों का होना, जोकि स्वयं में विविध थीं और राज्य से सम्बन्ध के वि-ाय में उनमें विविधता थी। उनमें से अनेक अपनी जनता के दावों को झेल पाने में असफल होने के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा पूर्व के सोवियत संघ के साथ हो लिए। लेकिन इसका अर्थ निर्भर बनना था।

स्वतंत्रता ने उभरे हुए राज्य रा-ट्रवाद के भीतर जातीय रा-ट्रवाद को भी मुक्ति प्रदान की और कुछ मामलों में - जैसे भारत, पाकिस्तान, मलेशिया, नाईजीरिया आदि - तो उसने उपनिवेशवाद विरोधी रा-ट्रवाद को धमकाया, जिसका उद्देश्य राज्य की परिरक्षण तथा साम्राज्यवादी शासकों की स्थान पूर्ति करना था। एक ओर भारतीय राज्य की एकता को चुनौती देते हुए मुसलमानों ने एक पृथक रा-ट्र-राज्य की माँग की तो दूसरी ओर जाति, वर्ग, जातीय मूलवंश, धर्म तथा भा-ाा ने पहचान की अलग-अलग परतों की रचना की, जिसने विरासत से प्राप्त मनमाने तौर पर बनाए गए राज्य के भीतर एक रा-ट्र की रचना में जटिलता को बढ़ा दिया। इन राज्यों के सामाजिक-राजनीतिक वातावरण ने गाँधी, नेहरू, सुकार्णो तथा नासिर जैसे कुछ नेताओं को मुक्तिदाता पैगम्बर की श्रेणी में रख दिया। फिर भी, स्वतंत्रता के बाद पश्चिम शिक्षित विशि-ट वर्ग तथा अधिकांश निरक्षर जनता के बीच अंतर और बढ़ा। अधिकांश नेताओं ने राज्यों की संरचनाओं में कोई परिवर्तन नहीं किया और औपनिवेशवादियों के विशे-ााधिकारों को बनाए रखा। उनकी सरकारों की नाजुकता के कारण स्थापित राज्यों के भीतर जातीय अल्पसंख्यकों ने स्वतंत्रता की माँग करते हुए आन्दोलन शुरु कर दिए। सूडान, ज़ायरे, छाड, नाइजीरिया, किन्या, घाना, श्रीलंका में स्वतंत्रता ने गृहयुद्ध को जन्म दिया और पाकिस्तान के पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में संघर्-ा के कारण अन्ततः एक नए रा-ट्र-राज्य बांग्लादेश का जन्म हुआ।

रा-ट्रवादी बुद्धिजीवियों के समक्ष सबसे बड़ी समस्या राज्य के वैधीकरण के लिए रा-ट्र के निर्माण की है। लेकिन इन समाजों के विविध जातीय चरित्र के कारण संघर्-ा अनिवार्य है, जोकि दो स्रोतों से शुरु होता है - (i) मनमाने तौर पर बने व विरासत में मिले राज्य में जातीय समूहों में मतभेदों का उठना और (ii) एक लघु समृद्धशाली विशि-ट वर्ग तथा गरीबी की दशा में रहते हुए अधिकांश लोगों के बीच व्यापक दूरी का होना। पहले मामले में रा-ट्रवाद का प्रयोग पुराने मतभेदों तथा संघ-र्ों को उकसाने के लिए एक हथियार के रूप में होता है और दूसरे मामले में, रा-ट्रवाद का प्रयोग रा-ट्र की वैकल्पिक कल्पना को उत्तेजित करने के लिए अथवा सभी मुसीबतों के लिए पश्चिम पर दो-ारोपण के लिए किया जाता है।

23.5 सामयिक घटनाएँः जातीय पुनरुत्थान, भूमण्डलीयकरण और रा-ट्रवाद

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से रा-ट्रवाद की अवधारणा को विभिन्न दिशाओं में ले जानी वाली तीन घटनाओं ने प्रभावित किया है। पहली तो प्रबलीकरण की प्रवृत्ति थी, जिसने रा-ट्र-राज्य को राजनीतिक सत्ता का प्रमुख स्रोत बनाया। रा-ट्र-राज्य जोकि राजनीतिक संगठन का सबसे शक्तिशाली स्वरूप है, के प्रभुत्व ने औपनिवेशिक साम्राज्यों की वास्तविक समाप्ति को आगे बढ़ा दिया है। 1945 में 51 राज्य थे जबकि 1972 में यह संख्या 185 हो गई थी। फिर, अनेक नए राज्यों में जहाँ रा-ट्रीय सरकारों की शक्ति शुरु में दुर्बल थी, 1970 तथा 1980 के दशकों में विशे-ाकर ज़ायरे, नाइजीरिया, मलेशिया, तथा पाकिस्तान जैसे तीसरी दुनिया के देशों में उनका प्रबलीकरण हुआ। भारत का उदाहरण संगठन के एक स्वरूप के रूप में रा-ट्र-राज्य की उत्तमता को दर्शाता है, जिसने न्यूनतम बल प्रयोग द्वारा नीतियों की जन आज्ञाकारिता प्राप्त की।

दूसरी घटना जातीय पुनरुत्थान से संबंधित है। रा-ट्र-राज्य के प्रबलीकरण के साथ अल्पसंख्यक रा-ट्रवादी आन्दोलनों का पुनरुत्थान हुआ है, जोकि राज्य के भीतर स्वायत्तता अथवा यहाँ तक कि स्वतंत्रता की माँग कर रहे हैं। इस प्रकार की संघर्-ा पूर्ण प्रवृत्तियाँ 1970 के दशक के बाद बढ़ गई हैं जबकि ब्रिटेन में स्कॉटलैण्ड तथा वेल्स में रा-ट्रवादी दलों का विकास हुआ। ब्रिटेन तथा कोरसिका के समूहों में फ्रांस ने सांस्कृतिक स्वायत्तता की माँग का प्रदर्शन देखा। कनाडा में क्यूबिक रा-ट्रवादियों ने स्वतंत्रता की माँग की। भारत और श्रीलंका क्रमशः कश्मीरी तथा तमिल रा-ट्रवादियों से समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिससे काफी खूनखराबा हुआ है। सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय साम्यवादी गुट के विघटन के बाद तो जातीय पुनरुत्थान संक्रामक बीमारी की तरह बढ़ गया है। पृथकतावादी तथा जातीय आन्दोलनों के उदय का कारण अंशतः कुछ अल्पसंख्यकों में समूह पहचान गुम हो जाने से और अंशतः इस तथ्य से है कि, दूसरे विश्व युद्ध के बाद से राज्य निर्माण के सिद्धान्त का आत्म निर्णय से कोई लेना देना नहीं था। नए रा-ट्र-राज्यों के निर्माण में विऔपनिवेशीकरण की शक्तियों, क्रान्ति अथवा बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप का हाथ अधिक था। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के बाद भारत तथा अल्जीरिया जैसे देशों में घटक अंशों के मध्य तनाव पैदा हो गया। फिर, बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप एकदम ग़ैर-रा-ट्रवादी रहा है। सोवियत संघ का घटक अंशों में टूटन और यूगोस्लाविया के विघटन ने यह दर्शाया है कि इन देशों का एकीकरण अधूरा था।

तीसरी घटना भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। पिछले दो दशकों के दौरान विश्व अत्यधिक तौर पर परस्पर-निर्भर हो गया है। आज रा-ट्र-राज्य को एक परस्पर निर्भर विश्व में काम करना पड़ता है। सूचना, धन, हथियार, प्रौद्योगिकी, प्रदू-ाण, मूल्य, विकरण, भोजन, कम्प्यूटर, मादक पदार्थ, बीमारी,

आँकड़े - सभी का प्रसार पूरे भूगोल में तेज़ी से चारो ओर होता है, जिसमें रा-ट्र-राज्यों को अधिक अवसर मिल रहे हैं लेकिन इससे उनके अस्तित्व पर खतरे भी बढ़ गए हैं। इसके साथ-साथ संयुक्त रा-ट्र संघ, विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन जैसे अन्तर्रा-ट्रीय तथा अधिरा-ट्रवादी संगठनों तथा ग़ैर-सरकारी संगठनों की भूमिका अत्यधिक बढ़ गई है। इस सम्बन्ध में पिछले दो दशकों में रा-ट्र-राज्य प्रणाली की किसी प्रकार से एक नवीन विश्व व्यवस्था में प्रभावित रूपांतरण के काफी अनुमान लगाए जा रहे हैं। प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या हम एक समान संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं या भूमण्डलीयकरण एक विशे-ा संस्कृति को मज़बूत करेगी? हॉब्सबॉन यह भवि-यवाणी करते हैं कि भवि-य राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अथवा भा-ा के आधार पर रा-ट्र-राज्यों तक सीमित नहीं रहेगा। वह अधिकरा-ट्रवादी होगा। भूगोल के अधिकरा-ट्रीय पुनर्संरचना में रा-ट्र-राज्य या रा-ट्र प्रतिरोध करेंगे या उनके अनुकूल हो जाएँगे अथवा निगल लिए जाएँगे या विस्थापित कर दिए जाएँगे। दूसरी ओर बर्थ का यह विचार है कि ये सारे अनुमान मनमाने हैं। भूमण्डलीयकरण तथा भौगोलिक संस्कृति की तलाश के बावजूद विश्व के अनेक हिस्सों में आत्म निर्णय के लिए संघ-र्षों का वर्तमान आत्मपुनजर्नन यह संकेत करता है कि रा-ट्र-राज्य की लोकतांत्रिक प्रकृति तथा रा-ट्र-राज्य के भीतर अल्पसंख्यकों को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करने से भी समस्या का निदान नहीं हुआ है और रा-ट्रवाद की परिभा-ा में बल प्रयोग अभी भी एक प्रमुख विशे-ाता है। एक जन आन्दोलन के रूप में रा-ट्रवाद की बड़ी सेनाओं की जबरन भर्ती और युद्ध करने में निर्णायक भूमिका रही है। वर्तमान में रा-ट्रवाद जनसंख्या के एक बड़े व्यापक हिस्से को आक-र्क लगता है और एक गतिशील अभिकर्त्ता के रूप में खड़ा होता है, जोकि हिंसा पर विश्वास करता है और उनके साथ-साथ शांतिपूर्ण जनएकत्रीकरण को प्रोत्साहन देता है।

भूमण्डलीयकरण के संदर्भ में संप्रभुता को त्यागने में हिचकिचाहट तथा आंतरिक मामलों में नियंत्रण खो देने से रा-ट्र-राज्य के राजनीतिक सिद्धान्त में रा-ट्रवाद की उपस्थिति बढ़ जाएगी। यहाँ परस्पर विरोधी शक्तियों के विकास को भी देखा जा सकता हैः एक तरफ तो अन्तर्रा-ट्रीय मंचों व संस्थाओं में भाग लेने और विश्व समुदाय के अन्य सदस्यों के समान नीतियों की रचना की तलाश है, तो दूसरी ओर रा-ट्र-राज्य के हितों की सुरक्षा है। उदाहरण के लिए, यूरोपीयन यूनियन ने सदस्य रा-ट्र-राज्यों की एकता व पहचान के परिरक्षण को कम नहीं किया है।

समकालीन रा-ट्रवाद आधुनिकता की चाकरी में परम्परा का उपयोग करता है। आधुनिकता में संदेह व विखण्डन उल्लेखनीय हैं, क्योंकि उनकी आशा नहीं होती। एक एकमात्र अधिकारिक रूप से स्वीकृत ज्ञान की पद्धति के अभाव में एक विशे-ा प्रकार के विखण्डन को प्रतिबिम्बित करता था, जोकि हमारे समय में नहीं है। परम्परा की ओर वापसी एक संदर्भ की निरन्तरता के मूल्य पर ज़ोर देता है, जहाँ पर नवीन सामाजिक, राजनीतिक व प्रौद्योगिक वातावरण के निरन्तर परिवर्तन व अनुकूलन से व्यक्तियों की दैनिक जिन्दगी निश्चित होती है। रा-ट्र की अवधारणा की जड़ें पूर्व-आधुनिक काल में है तथा एक समुदाय के एक लम्बे समय तक के विकास के परिणाम के रूप में संस्कृति तथा भा-ा का परिप्रेक्ष्य रा-ट्र के प्रति व्यक्ति के आक-र्ण को प्रबलता से बनाए रखेगा। परम्परा वैधीकरण के एक सिद्धान्त के रूप में निहित तब तक रहेगी, जब तक कि वे वास्तव में उपयोग की जाती है। जीवन के परम्परागत स्वरूपों में आधुनिकता द्वारा लाए गए नए तत्त्व शामिल किए जाएँगे और उनके साथ घुलमिल जाएँगे।

भूमण्डलीयकरण उन व्यक्तियों में एक ज़ोरदार माँग या पहचान की समस्या खड़ा करता है, जोकि अधिकाधिक संसाधनों से लैस विदेशी सभ्यताओं के विस्तार से अपने साझे जीवन के निर्मित और विरासत में प्राप्त विचारों, मूल्यों, विश्वासों व ज्ञान के समग्र को खतरे में पाते हैं। कई मामलों में,

रा-ट्रवाद का उदय उत्तरोत्तर सजातीयता की प्रतिक्रिया में हुआ और वह पहचान की राजनीति के संघर्ा का प्रतिनिधित्व करता है। अतः यद्यपि भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया प्रखर होती जा रही है, तथापि ऐसी कोई भूमण्डलीय पहचान नहीं है, जोकि विविधतापूर्ण जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। अतः रा-ट्रवाद भूमण्डलीयकरण के आवेग से सुरक्षित निकलेगा।

23.6 सारांश

रा-ट्रवाद पर ऊपर की गई चर्चा को संक्षेप में निम्न तौर पर प्रस्तुत किया जा सकता हैः

रा-ट्रवाद एक भावना है, जिसका सम्बन्ध अपने देश, एक समान भा-ाा, विचार, मूल्य व परम्पराओं से लगाव से है। इसमें एक समूह की पहचान झण्डे, गीतों आदि के चिह्नों को निशानों से होती है जोकि उसे 'अन्यों' से अलग करते हैं। यह लगाव एक पहचान की रचना करता है और उस पहचान के आक-र्ाण का एक अतीत होता है। उसमें जनता को एकजुट करने की शक्ति होती है।

रा-ट्रवाद की एक बहुत बड़ी विशे-ाता उसकी विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक स्तरों के लोगों को इकट्ठा करने की क्षमता है। यह शासक वर्गों का जनता का बिना शर्त नि-ठा बनाए रखने तथा उसे यह विश्वास दिलाने की कि शासितों के साथ उनकी समानताएँ ज्यादा है, कि यह शासक वर्गों की एक काल्पनिक सोच है जिसका उपयोग जनता की बिना शर्त नि-ठा बनाए रखने तथा उसे यह विश्वास दिलाने के लिए किया जाता है, कि शासितों के साथ उनकी समानताएँ अधिक हैं। रा-ट्रवाद की स्थिरता को समझने के लिए इस मूल तत्त्व को जानना आवश्यक है।

रा-ट्रवाद के एक सिद्धान्त को रा-ट्रवाद की धारणा और रा-ट्रीय चेतना तथा रा-ट्रीय पहचान के विकास के लिए उत्तरदायी तत्त्वों जैसे प्रश्नों का अध्ययन करना होता है। इसके अलावा पश्चिमी यूरोप में रा-ट्र के विचार की जड़ों तथा उनके विकास का भी अध्ययन करना होता है। रा-ट्रवाद का सम्पूर्ण विश्व में फैलाव तथा रा-ट्रवाद को समकालीन चुनौतियाँ भी इसके सिद्धान्त के अंग हैं।

इस इकाई में चर्चित रा-ट्रवाद के विभिन्न सिद्धान्तों ने इस पहेली को सुलझाने की कोशिश की है कि रा-ट्र पहली बार कब प्रकट हुआ। रा-ट्रवाद के मौलिक सिद्धान्त रा-ट्रों के इतिहास पर केन्द्रित करते हैं और रा-ट्र को प्राचीन तथा अस्मरणीय मानते हैं। वे रा-ट्र को एक सांस्कृतिक समुदाय, जड़सहित, अंगिक, स्वाभाविक तथा एक समग्र के रूप में देखते हैं। आधुनिकतावादी सिद्धान्त, चाहे वे सामाजिक, संचार आधारित, आर्थिकवादी अथवा राजनीतिक-वैचारिक हों, रा-ट्र को एक राजनीतिक समुदाय और क्रान्ति के युग में रचित एक आधुनिक व सामाजिक निर्माण के रूप में देखते हैं। वे रा-ट्रवाद को पुनर्जागरण, धर्म-सुधार, व्यापारिकरण, औद्योगीकरण, शहरीकरण जैसे आन्दोलनों के साथ-साथ औपनिवेशिकवाद तथा साम्राज्यवाद से जोड़ते हैं।

ऐतिहासिक तौर पर रा-ट्र-राज्य का विचार इंग्लैण्ड से शुरु हुआ और उनके बाद फ्रांस, जर्मनी तथा इटली जैसे पश्चिमी यूरोप के देश में फैला। पूर्वी यूरोप में रा-ट्र-राज्य के निर्माण से तीन साम्राज्यों - हैप्सबर्ग, ओटोमन तथा एशियन का विघटन हुआ, जिसका परिणाम पोलैण्ड, चैकोस्लावाकिया, लिथूनिया, लेटवीया, रोमानिया आदि नए राज्यों की रचना में हुआ। अमरीकी क्रान्ति ने रा-ट्रवाद के एक नए प्रकार की रचना की, जिसका अर्थ पुराने बंधनों को तोड़ना व नए बंधनों का निर्माण था। 20वीं शताब्दी में एशिया तथा अफ्रीका में उपनिवेशवाद विरोधी रा-ट्रवाद का प्रारंभ, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद,

जातीयवाद, रंगभेद आदि के विरुद्ध एक सहज तथा विदेशियों से घृणा भावना के साथ हुआ। उत्तर-द्वितीय विश्व युद्ध काल ने रा-ट्रवाद तथा रा-ट्रवाद के आत्म निर्णय के अधिकार की विजय देखी। इसके परिणामस्वरूप एशिया तथा अफ्रीका में अनेक नए रा-ट्र-राज्यों का उदय हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् से रा-ट्रवाद को प्रभावित करने वाली तीन घटनाएँ हुई हैं - प्रबलीकरण, विखण्डीकरण तथा भूमण्डलीयकरण। 1970 तक द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले राज्य अपनी स्थिति का प्रबलीकरण करने में सफल रहे। लेकिन उनके साथ-साथ इंग्लैण्ड, कनाडा तथा फ्रांस जैसे विकसित देशों में तथा भारत तथा श्रीलंका जैसे विकासशील देशों में अल्पसंख्यक रा-ट्रीय आन्दोलनों में जातीय पुनरुत्थान का उदय हुआ। और अंत में भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया राज्यों की रा-ट्रीय पहचान में एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रही है। लेकिन रा-ट्रवाद इन सभी चुनौतियों का सामना करने में सफल रहा है और अभी भी वह विश्व में एक वर्चस्वशाली शक्ति है।

23.7 अभ्यास प्रश्न

1. रा-ट्रवाद से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।
2. रा-ट्रीय पहचान के उदय के लिए उत्तरदायी तत्त्वों की चर्चा कीजिए।
3. रा-ट्रवाद के सिद्धान्तों की दो श्रेणियाँ कौन सी हैं? व्याख्या कीजिए।
4. रा-ट्रवाद के विभिन्न सिद्धान्तों के बारे में बतलाइए।
5. रा-ट्रवाद के किन्हीं दो सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
6. रा-ट्रवाद के उदय एवं विकास के लिए उत्तरदायी तत्त्वों की व्याख्या कीजिए।
7. उपनिवेश-विरोधी रा-ट्रवाद पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।
8. रा-ट्रवाद के क्षेत्र में समकालीन घटनाओं की चर्चा कीजिए।